

प्रथम संस्करण  
मिनापुर, १९९१

प्रकाशक  
राजराज एण्ड सन्स  
बोम्बे बाजार १ ६४ दिल्ली

मूल्य  
चार रुपये

●  
कार्यालय व प्रेष  
बी टी रोड गान्धिका दिल्ली १२

●  
विजो-बेम्ब  
बम्बोरी रोड दिल्ली ९

दिल्ली दिल्ली डब दिल्ली डी मुद्रा

मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्

प्रशस्ति-पत्र

श्री प्रानन्द मिश्र

को

सन् १९५६ ई० के निम्न पुष्पागण लेखित

“महोत्सव पद्य”

निम्न के प्रकाशन

“हिमालय के आँसू”

पद्य पर उनका साहित्य-सभा की मर्यादा करते हुए

मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्

२१ १० (सहस्रतम की गन्दी)

का

“द्वितीय-पुरस्कार”

सम्मानार्हक प्रदान करता है।

शा० मा पट्टिन  
सचिव

संयोजक कायदा  
समिति

सन् ११ १९६०

महामाय निराज्ञ की सेवा में  
मह अर्चन कृति  
साधर

# निवेदन

“कविता की घमेली राह नुही धीर जमेसी के बुज में होकर नहीं प्राप्ता समर्थ बुद्धि की कड़ी बट्टान पर मैं होकर जानैवासी है।

प्रमत्तु बाध्य-संग्रह ‘हिमामय के घाँसू’ के प्रारम्भिक निवेदन के रूप में कुछ कहने में पूर्व कहना मुझे ‘कविसाग’ की भूमिका में कविवर दिनकरजी का उपर्युक्त वाक्य स्मरण हो आया है। मैंने दिनकरजी का इस मग की हिम्मी की गई कवि-जीड़ी के प्रति विना-सर्वेण की तरह स्वीकार किया है। यह ध्यान में लायें तब पहुँची है धीर मैं नुही-जमेसी के बुज तथा समर्थ बुद्धि की कड़ी बट्टान के बीच सार्वजनिक का दर्शन करना चाहने हुए भी दिनकरजी के इस मग में धार्मिक प्रभावित हुआ हूँ। हाँ मैं जानती हूँ कुछ इस तरह कहना चाहूँगा कि हमारी घाणसी कविता तभी समर्थ एवं मार्गदर्शक नहीं जा सकेगी जब नुही जमेसी का बुज कड़ी बट्टान पर महसूस होगा जब धूर परती की घानी कीड़ कर निज-जैसे धीर उमम फोना की दानियों पर का हम धीर पयसाने का मुख-छाये।

‘सापना’ के नाम में मेरा प्रथम काव्य-संग्रह १९४२ में प्रकाशित हुआ था। १९४३ में मिशना प्रारम्भ किया। फिर १९४७ में ‘जदेरी का जीहू’ तथा ‘भद्री की रानी’ में दो प्रबन्ध प्रकाशित हुए। धीर अब ‘हिमामय के घाँसू’ के नाम से मेरी ६१ कविताओं का यह सङ्ग्रह प्रकाशित होने जा रहा है। ‘हिमामय के घाँसू’ को हाथ ही मैं सम्प्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा देव-पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

नहीं जानता कि मैं कच्छी कविता निग भी पाता हूँ या नहीं। हमारे निर्मय का परिवार भी मेरा का नहीं होता। मेरे धर्म-धर्म का आधार-भूत ज्ञान ही है कि मैंने अब तक जो कुछ भी लिखा है उसका परिवार काँस्य ज्ञान-धर निग है ईमान-धर मैं लिखा है मोक्ष-धर निग है। यह टीक है कि मैं घमेली हम प्यारद कनों की साहित्यिक भाषा के विषय में बहुत कुछ कहना चाहता हूँ पर यह बात भी जान है। यह मेरा जीन रह जाना परिवार-धर्म-धर है।

राज्याल एवम् मग के व्यवस्थापक भी विद्यमान की व्यवस्था के रूप में उनके कहने में यह बुद्धि करने को का मैं चाहती की सेवा तक का रही है।

कवियों के लिए सेवा-दात्री—

कविवर

महारा

१ जुलाई १९९१

घान्ता मिश्र



## अनुक्रम

क्यों बिपना है ?	१
मेरे दीन	११
बना नहीं है ?	१२
गकघोना नहीं बिपना	१७
लोकगोत्र	१८
दीन बाणी हो गए हैं	२१
पोंड	२३
मातर का बिपनार बाणि	२७
बिटी का बने	३१
दीन	३३
लोक बाघो	३४
गावट मे	३७
दीन	३८
दीन	४
दीन बाघो	४१
लोकगोत्र दीन	४२
बाणिगोत्र	४४
दीन	४७
बने के दिव	४८
बनार बाघो	४९
बाणिगोत्र बाघो लोकागोत्र	५१
बाणि के दिव	५४
लोक बाघो	५८
लोक दीन	६
लोक बाघो	६१
लोक बाघो लोकागोत्र	६३
लोक दीन	६८
लोक दीन	७१
लोक दीन	७६
लोक दीन लोकागोत्र	७९
लोक दीन	८१

पगलपन विरस	७६
पमर प्रभात	८२
मुलमी रत्ना-बग्न	८४
कायम से	८६
हरिजन-बाला	८
गात्र	९१
घात बहुत माने का मन है	९३
घरदू के बाद से	९५
उत्तमर्ष	९७
मीन	९९
मीन	१ १
मीन	१ ३
मीन	१ ५
मीन	१ ७
एक घरदू-निजा	१ ८
तुम	११
होली के दिन	११३
मीन	११५
मीन	११६
मीन	११७
मीन	१२
मीन	१२२
मीन	१२४
मारी	१२५
मीन	१३१
तामनेन के जगि	१३७
बीजन-बग्न	१३८
दूँ घोर वृष	१३८
हाते हुए रागी मे	१४१
हिवाग्न के घाँव	१४४





## अनुक्रम

क्यों लिखता हूँ ?	१
मेरे गीत	११
क्या नहीं है ?	१२
समझीना नहीं किया	१७
गोताघोर	१८
नीत बागी हो गए हैं	२१
घपेड़े	२३
छानर का बिलार बाहिए	२३
मिट्टी का कर्ज	२७
गीत	२८
गाते बाघी	३१
मायक मे	३३
गीत	३३
भीत	३३
दो घुस्ते	३७
खोगमी नीब	३८
बगुर्दवासी	३८
गीत	४०
कपवाँठ के दिन	४०
बहार बारी	४२
महात्मा गांधी एक सदाबसि	४१
गांधी के प्रति	४३
पद्मह घनस	४४
राज-मर्ष	४५
ज्योति-मर्ष	४५
गुरु बामना	४६
बीजा घोर तलवार	४६
घाति-गुरु	४७
पभीना	४७
बीनाक्षी एक प्रतिधिया	४७
दिपन	४७

गन्तव्य दिग्गज	७६
ममर प्रमाद	८२
तुलसी-रत्ना-रत्नम	८४
कामल से	८६
हरिजन-बासा	८८
गाव	९१
साब बहुत माने का मन है	९३
घर के पीर से	९५
छपासज	९७
मीठ	९९
गीठ	१ १
मीठ	१ ३
मीठ	१ ५
गीठ	१ ७
एक घर-निष्ठा	१ ८
तुम	११
होसी के दिन	११३
मीठ	११५
मीठ	११६
गीठ	११७
मीठ	१२
मीठ	१२२
मीठ	१२४
नारी	१२५
गीठ	१३१
ताननेन के प्रति	१३२
जीवन-वसंत	१३४
झूठ पीर बूझ	१३८
हारे हुए राही ने	१४१
हिमालय के घांगू	१४४







## क्यों लिखता हूँ ?

तुमने पूछा यह प्रश्न कि मैं क्यों लिखता हूँ ?

क्यों बीराहों पर मीढ़ जोड़कर गाता हूँ ?

क्यों कभी सितारों से बातें करता हूँ मैं

क्यों कभी घरा की धूस स्वप्न बतसाना हूँ ?

गंभीर स्वप्न यह नहीं मचाई है साधी !

जो कुछ कहता हूँ वह मेरा अपनापन है,

सुन्दर है सुन्दर, किंतु उपेक्षित जो कृष्ण

उसको मुन्दरगत बतसाना मेरा मन है।

तुम कह दोग यह झूठ कहो मुन सता हूँ

लेकिन मन की कहता हूँ आदत है मेरी

तुम बहुत ही नैया में मैं मग्नपारा में

दोनों जाएंग पार, मुझे होमी देरी !

लेकिन क्या करूँ मुझ यह राह अचिर मारि,

सीमा पय छाड़ जसा हूँ मैं उमके पय पर,

अपना अपना मन है मैं वंदल जसता हूँ

तुमको आना है आधो मोने के रय पर !

कम कहता हूँ मुझको भी साथ बिठा लो तुम  
है ज्ञात मुझ वेदस चलने लग जाओगे  
इसलिए कि बिन काँटो के मधुघन सूना है  
तुम भी पाँच के छाले गले लगाओगे।

मैंने तारों पर गीत लिखे उनमें मुझको  
अपने अन्तर की जलन दिखाई देती है  
पूतों की भरी जवानी का गाया मैंने  
इनमें मेरी साथें घोंगड़ाई लेती हैं।

बिजलियाँ मुझे उत्साह दिया करती पथ में  
कोयल की बूक नई सिहरन भर देती है।  
मेघाबलिया भावों में पथ लगा देती  
पावस की लड़कियाँ हृदय हरा कर देती हैं।

क्या उत्तर दू घुरज दिन भर क्या बसता है ?  
क्या मिला उस जग आसोकिट कर जाने में ?  
क्या मिसला है दीपक को अपनी देह जला—  
हारे, पथी को निगि भर राह दिखाने में ?

इसका इतना उत्तर केवल हो सकता है  
अपनी आवत है यम अपना अपना मन है  
जा सते नहीं सदा कुछ बसे आए हैं  
उनके बल पर ही ता गिनता यह मधुघन है।

मैं सबसे बरता प्यार मगर उनम क्यादा  
जो यही योग का नियम बदलने जीते हैं

मुरझात है, मकिन मुरझकर तिमित है  
जो बासी नहीं हमेशा ताजी पीते हैं ।

ऐसे जीनेबासों पर मुक्त तरस छाया  
जो मुश्किल को ही मौत समझ मर जाते हैं  
कठिनाई तो मंशिल की पहली सीढ़ी है  
सगता है बुरा कि क्यों गलती कर जाते हैं ।

तब मेरा विद्रोही मन मचने लगता है,  
गीतों की धार फूटकर बहने लगती है  
इन्सान इस तरह जियो कि मौत धरण बूमे  
जागो तन्द्रा से बाणी कहने लगती है ।

भावना नहीं है यह केबल मेरे मन की  
कृतव्यपरायणता कहती है गाता बस  
हैं ठेकदारी है तेरी दुनिया भर का  
मयमौत न हा बच्चों को गले सगाना बन ।

ससार कहाँ करछा परवाह किसी की भी  
जो छोड़ सके पन्-बिह्व वही तो जीवित है  
जो बुझे मने पर दीप जसा जाए अनगिन  
बह बुझता नहीं कभी बह तो चिरदीपित है ।

आ जीवन में विश्वास प्रीति दूढ़ मिले हुए,  
जो धक्कार को निज थीर बह है सविना  
बस यही सत्य मने पहचाना है धब तक  
जिसका अनुमान किया करती मरी कविता ।

मैं तुमसे पूछ रहा हूँ बतमा सपना हो  
मोनी साए हो याकि सनह पर तिरत हो ?  
देखा है बमी डूबकर इस गहराई को  
या कबल सहरे देल-देलेकर डरते हो ?

मैं डूबा हूँ साया हूँ मोनी पिरो रहा  
तुम देग रह यह उनकी ही सो मासा है  
यह सब है इसम नही मुरा की मादकता  
पर कुन्दन तुम्ह बना दे ऐसी ज्वाला है।

तुम चलना चाहोगे अब मुझमे कतराकर  
इसलिए कि पाप दीप बढ घोसा करता है  
इसलिए कि तुम पीते हो केवल मुरा-सुरा  
मेरा कवि उमम साया घोसा करता है।

जो पीवर जहर अमर होना चाह आएँ  
जो बेहाली माहे वे मुझमे दूर रहे  
जो जूझ सके मझपारा म वे साथ बसें  
जा बूल-बूल माहे ब अपनी राह बहे।

# मेरे गीत

हारे जीवन की शक्ति गीत हैं मेरे ।

हर शब्द एक प्राग् युग के सौचन का  
हर भाव एक उच्छ्वास प्रबलित मन का  
प्राणों की सीपी में गूँथकर निबन्धे हैं  
युग-पीढ़ा की अभिव्यक्ति गीत हैं मेरे ।  
हारे जीवन की शक्ति गीत हैं मेरे ।

जग की शक्ति के ये निम्न दण्ड हैं  
धर्मों को साधे हैं, माना लघु कण हैं  
इनकी लघुता पर मैं महिमा को बाँटूँ  
कण पर असीम शक्ति गीत हैं मेरे ।  
हारे जीवन की शक्ति गीत हैं मेरे ।

इनमें सावन की मजसूर हरिजामी है  
शक्ति की पीठलना ऊँचा की लामी है  
इनमें वह सब है जो बरेल्ल समूनि का  
मन की निष्कल अमुरक्ति गीत हैं मेरे ।  
हारे जीवन की शक्ति गीत हैं मेरे ।

वासी है इतनी धूल गीतों में ज्वाला  
 हर गीत अमरता के आसव का प्यासा  
 जीवन के तप के ये प्रतीक हैं पावन  
 बघन से खरम बिरक्ति गीत हैं मेरे।  
 हारे जीवन की शक्ति गीत हैं मेरे।

## क्या नहीं है ?

पूछते हो तुम कि मेरे पास क्या है ?

क्या नहीं है ?

बादलों का दर्द बिजली की तड़प घाँसू घटा के  
रात की स्याही सितारों की जलन सिमकी पवन की ।  
आह फूसों की कि जिनका तन विधा है कष्टकों से  
उस पपीहे की व्याधा करुणा जहाँ सारे भुवन की ।  
वदना से कीमती हीरे नहीं मोती नहीं हैं ।

पूछते हो तुम कि मेरे पास क्या है ?

क्या नहीं है ?

कौन हैं वे पुतलियाँ जिनको नहीं पानी मिला है  
प्राण है कोई यहाँ जो पीर का पासा नहीं हो ?  
सौम है कोई कि जो उच्छ्वास की दासी नहीं हो  
पैर है कोई कि जिनके बस पर छासा नहीं हो ?  
झाँस वह वखी नहीं जो फूटकर रोती नहीं है ।

पूछते हो तुम कि मेरे पास क्या है ?

क्या नहीं है ?

बिस्म भर का दर्द घाँसू सिसकियाँ उच्छ्वास छासे  
जिस जगह आकर मिले हैं सब वहाँ कवि का हृदय है ।



एक सीमित बिन्दु से लेकर असीमित सागरों तक  
 जिस जगह खेल-धुल है सब वहाँ कवि का हृदय है।  
 दीन है वह मन जहाँ ममवदना होनी नहीं है।  
 पूछते हो तुम कि मेर पास क्या है ?  
 क्या नहीं है ?

## समझौता नहीं किया

तरी डूब जाएगी इसकी कभी मुझे परबाह नहीं थी  
मैंने किसी मानवासे तट से समझौता नहीं किया।

कितनी बार नाव को तुमने धारा के हाथों बेचा है  
कितनी बार बिना पूछे कर दो भँवरों के साथ सगाई।  
कितनी बार पगों को तुमने लहरों की बेड़ी पहनाई  
पर कुछ ऐसा हुआ नाव हर बार कूब से आ टकराई।  
मुझ-सा जेबा नहीं मिलेगा तुम्हें जि जिसने सपनों का—  
विप पी लिया कभी मधु के घट से समझौता नहीं किया।  
तरी डूब जाएगी इसकी कभी मुझे परबाह नहीं थी  
मैंने किसी मानवासे तट से समझौता नहीं किया।

तृप्ति छीनकर बाली तुमने प्राणों पर निस्सीम पिपासा  
जान क्या हो गया कि मुझको यही प्यास घरदान हो गई।  
जितनी जसन मुझे दी तुमने पूनम बनकर किसी बगर में  
जितने काँटे लिए कि उतनी धीर राह घामान हो गई।  
सिर पर धूप खत्री दुपहर को जीवन भर पग-तस घगारे,  
मेरी सहनशीलता ने बटम समझौता नहीं किया।  
तरी डूब जाएगी इसकी कभी मुझे परबाह नहीं थी  
मैंने किसी मानवासे तट से समझौता नहीं किया।

घब तो कुछ इतना घादी हूँ वदं नही तो जीना क्या है।  
 जितने धन्य तुम्हारे घर हो दे जाओ मैं फूल बनाऊँ।  
 जितनी पीड़ा पास तुम्हारे मुझे बदलो मुसकानों में  
 जहर मुझे मिला जाए जितना जीवन ने धमकूस बनाऊँ।  
 जीते-मरते मरते-जीते सेल हुआ मरना-जीना  
 मेरी तरुबाई ने मरघट से समझौता नहीं किया।  
 तरी दूब जाएगी इसकी कभी मुझे परवाह नहीं थी  
 मैंने किसी मानवाने तट से समझौता नहीं किया।

# गोताखोर

मैं गोताखोर, मुझे गहरा जाना होगा  
तुम तट पर बैठ भवर की बातें किया करो ।

मैं पहला खोजा नहीं धम्म भव-सागर का  
मुझसे पहले हमको कितनों ने याहा है  
तल के मोती खोजे परखे बिछराए हैं,  
डूबे हैं पर मिट्टी का कौल निबाहा है,  
मैं भी खोजा हूँ मुझमें-उनमें भेद यही  
मैं सबसे महेंगे उस मोती का आधिक हूँ—  
ओ मिला नहीं कह पा लेने की चुन मेरी  
तुम मिला सहेओ घर की बातें किया करो ।  
मैं गोताखोर, मुझे गहरा जाना होगा  
तुम तट पर बैठ भवर की बातें किया करो ।

पथ पर तो सब चलते हैं जमना पतता है  
पर मेरे चरण नया पथ चमना सीधे हैं  
तुम हँसो मगर मेरा विश्वास न हारेगा  
जीने के अपने-अपने अलग तरीके हैं,  
जिस पथ पर कोई पर निशानी छोड़ गया  
उस पथ पर चमना मेरे मन को रुपा नहीं  
काटे रौंदूँगा अपनी राह बनाऊँगा

तुम फूलों भरी उगार की बातें किया करो ।  
 कोई बोझा अपने मित्र पर मत लिया करो ।  
 मैं गोताखोर मुझे गहरे जाना होगा  
 तुम तट पर बैठ भँवर की बातें किया करो ।

नयनों के तीले तीर कृतलों की छाया  
 मन बाँध रही यह जो रंगों की बोरी है  
 इन गीली गलियों में भरमाया बौल नहीं  
 यह भूय घावमी की सचमुच कमजोरी है  
 लेकिन अपने पर विजय नहीं जितने पाई  
 मैं उसको कायर कहता हूँ पशु कहता हूँ  
 मैं इसीलिए बस वीराना मैं रहता हूँ  
 तुम जादू भरे नगर की बातें किया करो ।  
 जब जब हो जरा उगार, घोर पी लिया करो ।  
 मैं गोताखोर मुझे गहरे जाना होगा  
 तुम तट पर बैठ भँवर की बातें किया करो ।

पथ पर बसते उम रोज़ बहार मिली मुझसे  
 बाली 'गायक' । मैं तुमसे ब्याह रजाऊँगी  
 ऐसा मनमोबी मिना नहीं दूँगा मुझे  
 जग भर के फूल तुम्हारे घर से झाँकी  
 मैं बोला मेरा प्यार, सना तुम मुनी रहो  
 मेरे मन को कोई बंधन स्वीकार नहीं  
 तब से बहार में मेरा नागा टूट गया  
 फूला जो घपनी भोसी में रग लिया करो ।  
 मुझसे बयल पनभर की बातें किया करो ।  
 मैं गोताखोर मुझे गहरे जाना होगा  
 तुम तट पर बैठ भँवर की बातें किया करो ।

# गीत बागी हो गए हैं

सिंधु से कह दो कि मंचन के लिए तयार हो से  
घाज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।

इस तरह कब तक सहेजेगा तली म  
कोप धमूत का जगत् पाकर रहेगा  
यह धरोहर जोकि तू बैठा दबाए,  
एक दीवाना इसे साकर रहेगा  
य मँबर, साटें लहरियाँ व्यथ हैं सब  
घाज मैं सिर पर कफन बाँधे बसा हूँ  
कूल से कह दो कि वन्दन के लिए तयार हो से  
घाज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।  
मिथु से कह दो कि मंचन के लिए तयार हो से  
घाज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।

बे निराशा की घटाएँ छट चुकी हैं  
मैं नया विश्वास लेकर आ रहा हूँ  
फूल-कलियाँ पर जबानी आ गई है  
गीत जीवन की विजय के गा रहा हूँ  
स्वर्ग स अब यह धरिणी होठ सेगी  
इम दिमागों से बहो मेरी बजाएँ,

व्योम से कह दो कि पूजन के लिए तैयार हो से  
ग्राज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।  
सिंधु से कह दो कि मंथन के लिए तैयार हो से  
ग्राज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।

बौन यह पतझर बिजो लसबाखता है  
ग्राज मिट्टी के मसझने की घड़ी है  
देख मैं हरियासियाँ बरसा रहा हूँ  
ध्वज ! तुझ सज्जन की बड़ी है  
प्यास प्राणों की न सोखी जा सकेगी  
मर्त्य हूँ मरकर अधिकजीवित रहूँगा  
वास से कह दो समर्पण के लिए तैयार हो से  
ग्राज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।  
सिंधु से कह दो कि मंथन के लिए तैयार हो से  
ग्राज मेरे गीत बागी हो गए हैं ।

## थपेड़े

छा चुका ज़िंदगी के थपेड़े बहुत  
घार ही बन गई अब किनारा मुझे ।

बस पड़ी थी न जाने कहीं से तरी  
सक्य अज्ञात या राह अनजान थी  
शीप पर थी गगन की गहन नीसिमा  
सामने बारि-घारा प्रबहमान थी  
घौर भी तरिजियाँ साय बहती दिखी  
किंतु सबकी तरी पर तने पास थे  
नाब मेरी बिना पास-पठवार की—  
डोसती थी उभरते सहूर-जास थे  
डाँढ़ दो-बार ही खे सका था अभी  
मूससाधार पानी प्रभंजन बने  
हाथ साहस सगे तोसने प्राण का  
भाँधियों ने बहुत ही धुस्तारा मुझे ।  
छा चुका ज़िंदगी के थपेड़े बहुत  
घार ही बन गई अब किनारा मुझे ।

उसमनों से भरी बस रही सधु तरी  
थी यनी भादपद की धेंपेरी निशा



घोर चिता किसे थी सुझाता मुझे  
 मैं धुनूँ कौन-सी एक धोमल दिशा  
 हाँ कुतूहल भरा प्राण थासा स्वयं  
 रात के घाँव क्या है इसे जान मे  
 वेष गई धुन परज खोज सेने किरण  
 उस पड़े प्रात का सिर्फ अनुमान से  
 प्रात माया बसा राई धाई गई,  
 पाँव बलते रहे जग बदलता रहा  
 भत है रात लबिन दिलाता रहा  
 टूटकर ब्योम का हर मितारा मुझे।  
 रा पुनः जिवगी के बपेड़े बहुत  
 धार ही बन गई अब किनारा मुझे।

और अब जान पाया कि इस बिन्दु म  
 धार है सत्य माया सबे कूल है  
 क्या भवम बात है बाहरी जिवगी।  
 धूम भी धूल है धूल भी धूल है  
 सुख नहीं है अनवर यही पीर है  
 इसलिए पीर स अब मुझे प्यार है  
 सुग उम्ह जाति जीना नहीं जानत  
 जानत जो गरम की उम्हें धार है  
 धारणा बन गई है हृदय की घटल  
 जिवगी धूमरा नाम सपन का  
 धापनाई नहीं अब रही अब तनिक  
 फूल-मा राह का हर धौंगारा मुझे।  
 रा पुनः जिवगी के बपेड़े बहुत  
 धार ही बन गई अब किनारा मुझे।

# सागर का विस्तार चाहिए

मेरी भावुकता को सीमाओं बाँध नहीं पाओगे  
पोखर का तराव नहीं मैं सागर का विस्तार चाहिए ।

तुम तम की महमानी करते तम के आदी बन बैठे हो  
जीवन की अविज्ञेय चतुना के प्रतिवादी बन बैठे हो ।  
धुंध भ्रमते आँखों किरणों से कतराना सीख गई हैं  
अपकार के हाथ बिके अपनी बरवादी बन बैठे हो ।  
मिसी मुझे भी अमा मगर मैंने सूरज के सपन देखे  
तुम्हें मुबारक रात तुम्हारी मुझे ज्योति का ख़बार चाहिए ।  
मेरी भावुकता को सीमाओं में बाँध नहीं पाओगे  
पोखर का तराव नहीं मैं सागर का विस्तार चाहिए ।

तुम पतझड़ के दास कभी जागे तो अपना फूस निसाया  
कभी राशनी मिसी अगर ता अपने घर में दीप जलाया ।  
चाहा तो चाहा कि बटाएँ सिर्फ तुम्हारे द्वारे बरसें  
एक तुम्हारा आँगन-आँगन तुमने सावन को समझाया ।  
मैंने जीवन भर मुसकाकर कोई गेती आँख न दमनी  
कंस गिर्नू मुझे तो सारी बगिया का धंगार चाहिए ।  
मेरी भावुकता को सीमाओं में बाँध नहीं पाओगे  
पोखर का तराव नहीं मैं सागर का विस्तार चाहिए ।

बह तिनका मैं नहीं, कि छाँधी सिर पर बैठ नाचे-गाए,  
 मरे साहस की दुवला पर बिपदाओं में दीप भुकाए ।  
 मैं अपना पक्ष जमा कि मेरी अपनी जीवन की परिभाषा  
 चुने अगर वो मोती हुंसा चाहे संघन कर मर जाए ।  
 तुम जो परिधि दीवार बैठे अपनी गली सींचकर बैठे  
 मैं क्या करूँ कि मेरी साधों को असीम ससार चाहिए ।  
 मरी भावुकता को सीमाओं में बाँध नहीं पाओगे  
 पोखर का तराज नहीं मैं सागर का विस्तार चाहिए ।

## मिट्टी का कर्ज

बूखे नयनों में अलका में उलझा चितवन के सीर सहो  
पर इस मिट्टी को मत मूसो इसका भी कर्ज चुकाना है।

मैंने कब कहा कि तुम कलियों की छोक नखर से दूर रहो  
मैंने कब कहा कि तुम पूनम की रातों से मत प्यार करो  
मैंने कब कहा रूप की जादू-भगरी में धूमा न करो  
मैंने कब कहा कि मदिरा की बरसातों से मत प्यार करो  
मैं तो बस इतना कहता हूँ भाई ! फूसों में सूख खिलो  
झीरों के छास छीम न दें काँटे भी दूर हटाना है।  
इसका भी कर्ज चुकाना है।

यह बात शास है मुझे छाँह भी जीवन की सच्चाई है,  
लड़के-लड़के हम कभी किनारे तक आ जाया करते हैं  
आपाधापी-खीजातानी में जो गाँठें पड़ जाती हैं  
हम उन्हें प्यार के कोमल हाथों से सुलझाया करते हैं  
मैंने कब कहा चाँद की बाहों में तुम बकन मिटाओ मत  
बस याद रहे बस सूरज के धोलों में भी मुसकाना है।  
इसका भी कर्ज चुकाना है।

मिट्टी बह साहूकार कि जिसरा बज पथाना मुद्रित है  
 प्राया न एक ऐसा जिसने इसका घन लेकर दिया नहीं  
 प्राया न एक ऐसा जिसने रोकर-हुसकर बिप पिया नहीं  
 जो मूस नहीं सीटाते हैं वे ध्याम मिलाकर देते हैं  
 मैं तो वस इनका कहता हूँ भरमाना बोझ बढ़ाना है।  
 हूँ तो मयना मे बलकों में उमझो जिसवन के तीर सहो  
 पर, इस मिट्टी का मन यूना इसका भी कज बुझाना है।

# गीत

भ्राज उर भंगार से भंगार करना चाहता है ।

भव उठाकर शीप जीना चाहती मेरी जवानी  
भव न सोन की बनी दासी रहेगी पूत बाणी  
भव नहीं अपमान सहना चाहता पावन पसीना  
भव नहीं बेबस बहेगा झल्ल का अनमोल पानी  
भक्त बुका बीरब्र तुम्हारे न्याय की आशा भधूरी  
भ्राज हर अन्याय का प्रतिकार करना चाहता है ।  
भ्राज उर भंगार से भंगार करना चाहता है ।

भ्राज के अरमान ज्वाला बन पिघलना चाहते हैं  
अथु बनकर धार लावा की निक्सना चाहते हैं  
भ्राज नस-नस कौंध उठना चाहती है बिजलियाँ बन  
जिदगी की गीत परिभाषा बखसना चाहते हैं  
भव भौंघेरे की गुलामी से किरण उकता चुकी है  
रबि उज्जाला भ्राज कारागार करना चाहता है ।  
भ्राज उर भंगार से भंगार करना चाहता है ।

भ्राज बड़ा मुक्त है आधो प्रलय ! तूफान आधो ।  
धाँधियो आधो अमावस ! नाश के सामान आधो ।

ओ महत्तम ! जो कि मेरी क्षुद्रता भी भाखमाओ  
 मैं म मरकर भी मिटा हूँ काल के अमिमान आओ  
 घन धने आहो न मेरा बल सेबिन धव धवेगा  
 आज हर आघात यह स्वीकार करना चाहता है ।  
 आज उर अगार से अगार करना चाहता है ।

# गाते जाओ

तुम कहको सभी सबेरा है,  
मन के पंछी ! गाते जाओ ।

माना भगवान विजलिया ने  
हर बार नीड़ बिछराया है  
घाँधी ने तुम छितराए हैं  
भेंबियारा ने बमकाया है  
लेकिन हर बार धीर, तुमने  
तिनके चुन उसे सजाया है  
अर्जर पक्षों से भी तेरा—  
निश्चय मम छूकर घाया है,  
यह बात नई तो नहीं आज  
सूफान गरजते घाते हैं  
बकना जीबित मर जाना है,  
मन के पंछी ! गाते जाओ ।

तुम कहको सभी सबेरा है  
मन के पंछी ! गाते जाओ ।

मंजिस मत पूछो कूस कहाँ !  
जीवन तो अविरत बसना है



गिरना है गिरकर उठना है  
 उठना है धीर सँभलना है  
 झींझी हो या झोंझियारा हो  
 जलना है हरदम जलना है  
 झूलों में रग रग बिथी रहे  
 फिर भी हँस-हँसकर बिसलना है  
 जय का न प्रसोमन रिझा सके  
 भय हो न पराजय का मन को  
 तानो ये डेने धीर जरा  
 मन के पछी ! गाते जाओ ।  
 तुम चहको तभी सबेरा है  
 मन के पछी ! गाते जाओ ।

## साधक से

तुमने ही बरपान चुन लिया  
युग का शाप कौन भेजेगा ?

ठाम रहे यह आ प्यासों में  
फेंक उगतती मादक हाला  
गलबाहें बरमासा जैसी  
फिगकी-सी खचन मधुवासा  
रूप प्यार के भरते निर्भर  
मदहोशी में डूब डूबें  
तुमने ही मधुपान चुन लिया  
विष का शाप कौन भेजेगा ?  
युग का शाप कौन भेजेगा ?

देखो तो कितनी उजड़ी है  
जीवन की फूलों फुलवारी  
हाल हाल सूखी मुरझाई  
मरपत-सी यह क्यारी-क्यारी  
फूँफू-फूँफू किना भायल है  
धो जीवन मधुवन के मानी !

तुमने मुग सधान पुन लिया  
यह परिताप कौन भरेगा ?  
युग का पाप कौन भरेगा ?

प्राप्तो इन रीते प्राप्तो मे  
फिर साधों के फूल बिसाएँ,  
प्राप्तो इन सूनी धाँसों में  
फिर सपनों के साज सजाएँ,  
जिम नम का सूरज संन्यासी  
उसकी रात डलेगी कैसे ?  
तुम तोड़ोगे जग की सन्दा  
अपने आप कौन भरेगा ?  
युग का पाप कौन भरेगा ?

# गीत

जिसने भी माँगा जीवन से बरवान बहारों का माँगा  
मेरी दीवानी साधों ने भी भर पतझर से प्यार किया ।

जो भी रीझा अब तक रीझा मधु पर मखिरा की लाली पर  
रीझा भौरों के गुब्बन पर रीझा पराग की प्याली पर,  
जिसने भी माँगा सावन से बरवान फुहारों का माँगा  
मेरे गीतों ने विधुत की घंगार-नहर से प्यार किया ।  
मेरी दीवानी साधों ने भी भर पतझर से प्यार किया ।

जिसने चाही अब तक चाही नमचुवी महसा की छाया  
हीरा-मोती चाँदी-सोना बभब की क्षणभंगुर माया  
जिसने भी माँगा निजन से बरवान सिंघारों का माँगा  
मेरी मानी धमिसापा ने अपने पोंडहर से प्यार किया ।  
मेरी दीवानी साधों ने भी भर पतझर से प्यार किया ।

दो क्षण का सुख मेरा असीम बाह्य प्रवाह बहता न सका  
मृग की प्रबंधना के स्वर में मरा पीड़ित मन गा न सका  
धसनेवालों ने मधुवन से बरदान सहारों का माँगा  
मेरे पंथी ने जीवन भर कँटकित डगर से प्यार किया ।  
मेरी दीवानी साधों ने अब तक पतझर से प्यार किया ।

तबसे जीवन के सागर में भैया धाड़ी सबसे बाहे  
धारा में घुटने टोड़ दिए पतवारों के भाँभल बाहे  
जिसने भी माँगा उमरमन में बग़्गन तिनारों का माँगा  
मेरी तैराक भुजाओं ने बस एक भँवर से प्यार किया ।  
मेरी दीबानी साधों ने भी भर पतझर से प्यार किया ।

# गीत

दीप हूँ जिसने धँधरे से न अब तक हार मानी ।

यह नहीं है बात बासी पर मिमिर टूटा नहीं हो  
यह नहीं है बात बामी रात में सूटा महा हो  
यह नहीं है दूर प्राणों से रहे पीषा प्रमजन  
मौत पर सेजिन सदा हँसती रही मेरी जबानी ।  
दीप हूँ जिसने धँधरे से न अब तक हार मानी ।

प्राण लोभी तब खन था धाज भी सम्मुख खन है  
था बिकल तब भी हृदय तो धाज भी बेचन मन है  
घोर जब तक हूँ सना ऐम हृदय जलता रहेगा  
जानकर यह मेरे पलकों तक नहीं आई खानी ।  
दीप हूँ जिसने धँधरे से न अब तक हार मानी ।

हार सौ-सौ बार मन का धीर तो है बगमगाया  
तीर तक सौ बार जाकर होमना है सोन धाया  
प्राण की यह माध ही बस बुझ न पाई है धमो तक  
राह में मड़ते हुए हो खम्भ साँसा की कहानी ।  
दीप हूँ जिसने धँधरे से न अब तक हार मानी ।

## खोखली नींव

सुम ऊ पी-ऊ पी दीबारें सगे उठाने  
कंगूरे मडें मीनार सगे सजाने  
घीर नीब खोखली रह गई ।

घसकेगा

पोसा मराव है,

यह कैसा घर बना रहे हो

ऊपर से भारी दबाव है

उह जाएगा

भय्य तापना

धम का अपभ्यय

पहले नीब भरो दूक

फिर दीबार उठाओ

कंगूरे-मीनारें-बन्दनवार राजाओ

यह ता भेस न पाएगा पहमा पानी भी

क्याकि नीब खोखली रह गई ।

# चतुर्दशपदी

अधकार बाहर क्यादा है या अतर मे ?

सोच-सोचकर दारा सोम नही पाता हूँ  
मम के तारे अधिक याकि व्रण मेरे उर के ?

उलझी इसी अवि को सोम नही पाता हू ।  
सागर कं बुबबुद मेरी आँखो के आँसू,

तुम ही देखो इनमे कौन अधिक उबर है ।  
सापित उच्छ्वासों में जलते हुए पवन म

तुलना कौन करेगा किसका वेग प्रखर है ?  
मल्लल है बीरान कि विषवा सार्व मेरी

नीला यह आकाश कि मेरा समवेदन है ?  
मरघट की दग्धता जसन मेरे जीवन की

किसके हाथ बँधेगा जय का यह कगन है ?  
जग-भर की पीड़ा त्रिसके प्राणों का धन है,

उलझल उलझी अधिक अधिक या कविकामन है ?



## गीत

पूसा की बगिया बहो बहो बसर-बयारी,  
इसलिए कि तुमको जीवन सरस मिला है।

तुमने मुझ-सा धवसाद नहीं पाया है  
ऐसा मधुवन बरपाव नहीं पाया है  
मुझसे मुझसे मे पूस सिसकती फलियाँ  
बदला के जरा से गोसी-भीसी गलियाँ  
सावन आया लेकिन बिन बरसे लौटा  
मेरा मनभाया उबड़े घर से लौटा  
प्राणा को पावन मिला नयन को पानी  
मेरा जीवन धूला की सज पमा है।  
पूसा की बगिया बहो बहो बसर-बयारी  
इसलिए कि तुमको जीवन सरस मिला है।

तुम जब घोर बहती आई पुरवाई  
बाँदनी रूढ़ा मिममिम घम्बर म छाई  
घाँधी म जमी न जिस दीपन की बानी  
वह क्या जाने छमनी हामी है छाती  
मे जमा घोर भ्रमावाणा ने घेरा  
घनघार निमिरपायी रातों ने घेरा

टिमटिमा रहा हूँ ! क्या कम है ज्वना हूँ  
 एस नी जग में कोई दोष जता है ?  
 फूलों की बगिया कहो कहो बेसर-क्यारी  
 इसलिए कि तुमको जीवन सरस मिला है ।

माना कुछ धीर प्राण हैं पीड़ावाले  
 लेकिन ममता छोटी है उनके छासे  
 शीतलता पहले मिसी मिसी फिर ज्वाला  
 मैंने तो केवल एक पीर को पाना  
 बिजलियाँ मिसी कोई असधार न लाया  
 सट मिला तुम्हें पर, मैं मधरा को भाया  
 छाया में तो सघर्ष मधुर होता है  
 मेरा राही आँचल के बिना बसा है ।  
 फूलों की बगिया कहो कहो बेसर-क्यारी  
 इसलिए कि तुमको जीवन सरस मिला है ।

तुम-सा इन प्राणों का अंगार नहीं है  
 माधवी निशा मेरा संसार नहीं है  
 सपनी सिकता-सा अंतर इतना प्यासा  
 रह गई सृष्टि की भी न दोष अभिलाषा  
 समता है जैसे अनम-जनम सपना है,  
 रस क मधों को भरन मुझे मपना है,  
 भव तो बस इतनी साथ न कह दे दुनिया  
 यह मूरज दीप बुझाए हुए बसा है ।  
 फूलों की बगिया कहो कहो बेसर-क्यारी  
 इसलिए कि तुमको जीवन सरस मिला है ।

## वर्षगाँठ के दिन

आज एक वर्ष और बीत गया  
जीवन का रिसता घट और तनिक रीत गया ।  
आज एक वर्ष और बीत गया ।

ये जो चौबीस वर्ष जीवन के बीत गए,  
बचपन की कमी हुई जीवन का फूल लिला  
रूप रस गंध के झरोखों में डाल हिंसी  
अनुभव की रसना का जीने का स्वाद मिला  
सकल दो पल पीछे हट कर जो प्राया या  
प्राणा के पाम राज गई पीर साया या  
रूप रस गंध बने बाह्य के दीप जैसे  
फूल मुरमाता रहा काँटा पर चरण चले  
यह भी संघामभूमि घातों की भीड़ सगी  
कभी ज्योति बीत गई कभी तिमिर जीत गया ।  
आज एक वर्ष और बीत गया ।

सब गुण या स्वप्न बना जीवन की राहों में  
पीप धूप दुपहर की पग-सम संगारे थे  
मागिन-भी स्याह-स्याह रात घिरी मावम की  
चौन्नी पराई बनी डूबे सब तारे थे

भव मेरी दुनिया से ओमल उजियाला था

प्राणों का रोज नई पीड़ा न पाला था  
जीवन की नया को मिसी तेज धारा थी

खननम की यूँ बनी मुझ तक अंगारा थी  
रूठी-रूठी बहार पसकर के हाथों से—

साधों का पास-पास असमय हो पीत गया ।

आज एक वर्ष और बीत गया ।

भव जो भी दर्द मिला बहलाना सीख लिया

प्राणों की ज्वाला को गीतों में ढाल दिया  
भाँसू जो छगक पड़े सख्यों में गूँथ लिए,

सागर जो सोया था ऊपर उछाल दिया  
दुनिया को गीत मिले मन को मनमीत मिले

जीवन के द्वार नई आस्था के दीप जैसे  
पीड़ा का कालकूट में पीना सीख गया

गीतों की छाँह तसे भव जीना सीख गया  
बामी की प्रकृति मिसी भव मुझको दरबाजे

जो भी तूफान मिला मुझसे मयमीत गया ।  
आज एक वर्ष और बीत गया ।

भाँसों में भाँसू है प्राणों में ज्वाला है

छाती पर बोझ लिए मैं पथ पर चलता हूँ  
अधरों को भी ले जो जग का तम पी से जो

धुमने को जर्नू जिन्हु सूरज-सा असता हूँ  
ऐसा है फूस कौन भरने को जिसे नहीं

ऐसा है दीप कहाँ धुमने को जैसे नहीं  
उसभन से जीवन का यह रहस्य जाना है,

संसृति का एक सत्य मैंने पहचाना है

जन्म जहाँ मृत्यु वहाँ मृत्यु जहाँ जन्म वहाँ  
वर्तमान होगा कल इस जो घनीत गया ।  
आज एक बय घोर बीत गया ।

भागल की चिता का बोझ हुआ हलका है  
अब धीमू धीसों के हीरे हैं मोती हैं  
मन की हर माध मुझे सिन्धूरी सगती है  
सत्य जन्मता है वेदना जो धीज बोली है  
जग की व्यथा से हुआ आज बहुत प्यार मुझे  
अपना-मा सगता है सारा संसार मुझे  
फल बनी सागर-सी अब मन की गागर है  
मेरी यह घरनी है मेरा यह अंबर है  
सूनापन डूब गया मैंने जग जीत लिया  
मन की गमवेदन-सा मिस मनमीत गया ।  
आज एक बय धीर बीत गया ।



## बहार बाकी

उत्तम घरनी उत्तम अम्बर, उत्तम राहूँ उत्तम राहूँ  
अमी सुमन का सिंगार मूना अमी अमन की बहार बाकी ।

बड़ी तपन है बड़ी अमन है अघोर आहें बुझी निगाहें  
थक-थके तन मुटा-मुटा मन अमी अभावम कभी नहीं है  
अमी हवा में नमी न आई अमी दर्द में कमी न आई  
अमा मजेरा सेवर न पाया अमी रोशनी किसी नहीं है  
अमी न माटी उबल सकी है अमी न दुनिया बबल मची है  
अमी मुँह हैं पनन तुम्हारे अमी नींद का खमार बाकी ।  
अमी सुमन का सिंगार मूना अमी अमन की बहार बाकी ।

बही सिलसिला हृदय-हृदय का बचे हुए हैं लूने नहीं हैं  
बही घुन है बही अंधरा अमी घुना की पटी में छाई  
बही बिपमता के हाथ बाये जि इमकी स्याही घुली नहीं है  
अमी निगाहों की माँग मूनी अमी मिट्टी मुबह न आई  
अमी पहाड़ों का बोझ फिर पर कमल तुम्हारी में टूट आए,  
अमी मृजन का मिनार गुमगुम अमी प्यार की पुकार बाकी ।  
अमी सुमन का सिंगार मूना अमी अमन की बहार बाकी ।

अमी बनी मुस्कुरा में पाई अमी अमर गुनगुना में पाए,  
अमी पत्थर डगडगा रहे हैं अमी में आँसू बहल सके हैं

हवा मे पाँखें न तोल पाए, अभी पलेरु डरे हुए हैं  
अभी घाँघियाँ बहक रही हैं अभी न काँटे कुचल सके हैं  
अभी उमरों के सर्द पाँवों की बेड़ियाँ काटनी पड़गी  
अभी न खोहू तपा सुम्हारा अभी प्रलय पर प्रहार बाकी ।  
अभी सुमन का सिंगार सूना अभी चमन की बहार बाकी ।



## महात्मा गांधी एक श्रद्धाजलि

विश्व के सबसे बड़े वरदान मेरी वन्दना सो ।

क्या तिमिर था पथ पर जमना तलक दूभर हुआ था  
जगमगाना क्या सिसक जलना तलक दूभर हुआ था  
और तब तुम-सा प्रमथ-प्राणीप दुनिया को मिना था  
आपदाओं का कनेना भी जिसे देखा हिंसा था

सत्य के सुलभ हुए संधान ! मेरी वन्दना सो ।  
विश्व के सबसे बड़े वरदान ! मेरी वन्दना सो ।

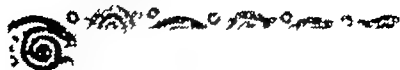
मौन गुजन थे जमन के फूल मुरझाए हुए थे  
कमारियाँ उबड़ी भयानक ध्वस भदमाए हुए थे  
जीम कोयल की मिसी थी 'थी वहाँ' के मान बन्दी  
पर, जहाँ तुम रह न सकते थे वहाँ धरमान बन्दी

भूमि पर थे स्वर्ग का मामान मेरी वन्दना सो ।  
विश्व के सबसे बड़े वरदान ! मेरी वन्दना सो ।



पो गए बिप-कोप हमने पा लिया मधु-जान दानी !  
 प्राण देकर दे गए तुम जड़-जगत् को प्राण दानी !  
 काम तुमको खा गया ! या काम को तुम खा गए हो  
 मृत्यु बिरजीवन जहाँ उस बिन्दु तक तुम आ गए हो

बन्दना सो मुक्ति के सोपान ! मेरी बन्दना सो ।  
 बिद्वत् के सबसे बड़े बरदान ! मेरी बन्दना सो ।



## गांधी के प्रति

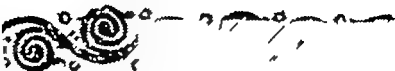
जब-जब तिमिर तरण होता है  
 उबियासा उबास रोता है  
 तब तब इस धरती पर कोई  
 ऐसा एक धीप जलता है,  
 जो उजियासे को निहार दे  
 धीप धीप धर धर उजार दे।

जब-जब पठभर के दिन घाते  
 किसलय कनी कुसुम कुन्डलावे  
 तब-तब इस धरती पर कोई  
 ऐसा एक सुमन खिलता है,  
 जो सारी बगिया सेंवार दे  
 पठभर का पानी उतार दे।

जब जब पथ हुआ पथरीसा  
 धूस धूस हो गया हठीसा  
 तब तब हम धरती पर कोई  
 ऐसा एक चरण खमता है

जोकि पक पय का बुहार दे,  
प्राणों को जय की पुकार दे।

ऐसा एक दीप था गांधी  
ऐसा एक सुमन था गांधी  
ऐसा एक चरण था गांधी।



## पन्द्रह अगस्त

कसियाँ चटकीं पछी चहके नम में ऊया की मासी है  
 सुन्न के समृद्धियो क मधुस भर गई प्राण की प्यासी है  
 मधु पव धात्र सब व्यस्त मस्त ।  
 अभिवादन है पन्द्रह अगस्त ।

कितने महान बलिवानों की अनुपम साकार कहानी हो  
 भारत की सरुण तपस्या की तुम एक ज्वलंत निशानी हो  
 तुममे भावी की गति प्रद्यस्त ।  
 अभिवादन है पन्द्रह अगस्त ।

अक्षुर से तर तर से विद्यान बट में परिवर्तित मुक्त फसो  
 जम भर का पी सो अघकार, ऐसे निभूम प्रदीप जसो  
 अपित मन की थड़ा समस्त ।  
 अभिवादन है पन्द्रह अगस्त ।

धरती पर जगे स्वर्ग उतरता आना है  
पंछी पर सोस प्रभाती गाते आते हैं।

किसने तिनके से पथ का श्रग हटाया है ?  
बन्दा व मुल से किसने दाग मिटाया है ?  
छाती में सहज सहज पीर दुनिया भर की  
किसने सुहाग का सुल-सिन्दूर सुटाया है ?

भारत जो दुनिया भर में गौरवशाली है  
भारत जो जग के मधुवन की हरियाली है  
भारत जिसमें स्वर्ण-राज का कोहनूर  
भारत जो जीवन धम्बर की उजियाली है।

गीता का चिरवरदान दिया जिसने जग को  
'तम से प्रकाश' उत्पान दिया जिसने जग को  
'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पावनतम महामन्त्र  
जीवन का दर्शन दान दिया जिसने जग को।

मस्त्र की गौरवशाली मन की अभिमान दिया  
मस्त्र से प्रागे जाने का सामान दिया  
आँगा में धरण घुमाए जो निर्यनता के  
नम से बुदिया में सौंप तुम्हें भगवान दिया।

उस भारत की जय का यह पावन उत्सव है  
जिम्हने नि प्रसन्न कर दिसमाया समक है  
तमपारे अजित धन्याधार धरण छूने  
गूँजना अनुदिन गन्ध अहिमा का रव है।

घरती का बटा पावन पथ मनाता है  
 तद्वर-तद्वर हृषित तामियाँ बनाता है  
 स्वागत के गान गगन में मही समा पाते  
 तोपों का स्वर नभ की छाती दहसाता है ।

यह कसी-कसी प्राणों की साध फसी फूली  
 पलभर का दर्प चढा परिवर्तन की धूसी  
 स्वरको सरगम बाणी को नवउत्साह मिला  
 नूतन पट पर नवचित्र आकृषी है तुसी ।

इतिहासों के पूछो की मापा बदल गई,  
 चरणों की गति की बहु परिमापा बदल गई,  
 हो रहा नीड़ से देखो बिजली का बिबाद  
 पीड़ा उबास आँधी की आघा बदल गई ।

मेरे भारत ! स्वीकार करा बदल बलि का  
 प्रतिष्ठा तुम्ही हो अँधियारे जग में रबि का  
 पथ-दशक ससृति-गति के तुम अनुपम अजोय  
 बन सका न मुझसे पूष चित्र पावन छवि का ।



## ज्योति-पर्व

घरती घोर गगन के दीपों का आलोक-समन्वय  
सी-सी हाव उठा आभा के सोला जीवन की जय ।

दीप-दीप की प्राण-ज्योति में अक्षय तम मलकाय  
फहरा केतु प्रवर आला का कृटिम घेंघेरा हारा  
अभिषेकित तर प्रणिमा मंदिर बनी जगत की कारा  
ज्योति न हारी कभी न हारेगी अब यह निस्संशय ।  
घरती घोर गगन के दीपों का आलोक-समन्वय  
सी-सी हाव उठा आभा के सोला जीवन की जय ।

गई अमावस मूम रही भ्रमभ्रम दीपों की पातें  
कही कल्परात्रों में गुमसुम के तम की वारातें  
मपट-मपट की धूम विनगियों की तन रही कनातें  
दमक रही बुन्दन-नी धरती अगमन अम्बर आसय ।  
घरती घोर गगन के दीपों का आलोक-समन्वय  
सी-सी हाव उठा आभा के सोला जीवन की जय ।

अब न रहे प्रणम्य तुम्हारे तम म भी भोषिपारा  
प्राण प्रणीयो ! मुझकर भी तुम पी सोगे तम सारा

आज क्षण ही नहा झुकेगा गौरव-मान तुम्हारा  
 विचार यह आसोक सबदा टसे नहीं यह निश्चय ।  
 घटती और गगन के दीपों का आसोक-समन्वय  
 सी-सी हाथ उठा आभा कं मोसा जीवन की जय ।



## शुभ कामना

छत्तीस जनवरी । क्या हो वन्दन तेरा  
तेरी पूजा में कौन गीत में गाऊँ ?  
हर प्राण तुम्हारे गौरव में डूबा है  
यह गाथा मैं किन छन्दों में पुहराऊँ ?

यह जो हरीविद्या छोड़े धरती कैसी  
यह जो सतरंगी धम्मर भूम रहा है  
यह जो कारा को तोड़ निकल आया है  
आकाश पवन दोनों में घूम रहा है ।

यह जो फूला ने धीमि तोलकर देला  
यह जो भीरों की भीड़ बसी घाटी है  
यह निर्मलरिणी जलधरंग सी बहती  
ये जो मधियाँ बस-बस ध्वनि में गाती हैं ।

यह जो गुलाब बरमाणी घाती ऊँचा  
यह जो विरहों के दस मचसे घाते हैं  
पने भर भरकर बरते हुए विमोहों  
किगकी किगबनि ये पंछी गात हैं ?

यह सब तेरे स्वागत का साज मना है  
छब्बीस जनवरी कौन गीत में गाऊ ?  
समार तुम्हारी छाया में बेसन है,  
यह गाया मैं बिन छन्दों में दुहराऊँ ?

यह दिन क्या कभी मुसा पाएगा भारत !  
यह दिन जब पहला भूरज मुसकाया था  
यह दिन कि हिमालय ने सिर उठा लिया था  
इतिहास नये सन्धि में उस धाया था ।

‘राबी’ के तट पर एक ग्याति जागी थी  
जिसने तम के तन में दरार छाती थी  
उस दिन ग्वाला बरसाती देखी जग ने  
हर मौख कि जो पहले भामूवाली थी ।

दर्दित गीत भरवी बनकर जागे  
माँसा की तूफानों से हुई सगाई,  
आबाद जिँगे हम आबाद मिटोंग  
सौ सौ कठों ने उठ आबाद सगाई ।

पोलियाँ जुमे सीनों पर हँसकर भुलीं  
फाँसी की डोरी हमें बनी बरमासा  
छब्बीस जनवरी ! तेरी छाया में हम  
साए तम के हाथों से छोग उबासा ।

तब से प्रभात की छू न सका है कोई,  
हम प्रगति पथ पर बड़े बसे घाते हैं  
सहार भजाए पीप खड़ हैं भाग  
अप्याचारों पर बड़े बस घाते हैं ।

धम के हाथों से हम युग के खंडहर पर  
अपना घर नये सिरे से बना रहे है  
यह मंदिर धम वीरान न हो पाएगा  
दुनिया को पूरी पुनोत्थी सुना रहे है।

घास्ती करोह हाथों ने आगे बढ़कर,  
तेरे पक्ष के काँटों को बीन लिया है  
छब्बीस जनवरी ! मेघा के घर बन्दी  
हमने तेरा जीवन रस छीन लिया है।

फहराएगी यह विजय ध्वजा ऐसे ही  
छब्बीस जनवरी ! जय हो तेरी जय हो  
कामना हमारी तू फूलों से दोने  
तेरे आँगन की मुख समृद्धि अगम हो।



## वीणा और तलवार

जरा सोमो तराजू पर कि सिक्की मोम नाची है  
तुम्हें तलवार प्यारी है हमें ऋकार प्यारी है।

मरो तुम हर बगीचा मनुष्यों चौखों-कराहों से  
मगर हम हर बगीचा फूल-दाबनम स सजाव है  
लिए हो आदमी क खून में इसे दुबारे तुम  
खड़े हम युद्ध क मैदान में वीणा बजाते हैं,  
करो तुम मौत की पूजा जसाओ दीप मरपट में  
जबानी की हमेशा आरती हमन उगाये है।  
तुम्हें तलवार प्यारी है हम ऋकार प्यारी है।

बुला लाए अगर तुम द्वार पर पतझड़ उमाने के  
हमारे भी सजानों में बहारों की कमी है क्या ?  
सगाओ प्राण बरसाकर अगर देख नो तुम भी  
हमारी मधमामा में फुहारों की कमी है क्या ?  
बजाओ नेरियाँ तुम हम मगर मल्हार गाएंगे  
करो तुम ध्वस हमने सजना हरदम बुतारी है।  
तुम्हें तलवार प्यारी है, हमें ऋकार प्यारी है।

जरा बीते हुए इतिहास के पन्ने पलट देखो  
यहाँ जितने हुए तलवार की जप बोलनबासे

बले ये सरय की आवाज को परो कुचसते जो  
 यहाँ जितने हुए हैं मिथु मे विष घासनेवाले  
 सभी ने एक निन मू पर पड़ी कीणा उठाई है  
 सभी न एक दिन इसकी रेंघी सरगम सँवारी है।  
 तुम्हें तसवार प्यारी है हमें झंकार प्यारी है।

बुनो हर बार तुम संसार के तन पर कफन कासा  
 उठें हम घोर उड़कर उस तबाही को दफन कर दें  
 जहाँ तुम एक घर छोड़ो वहाँ हम ताज बनवा दें  
 जहाँ बगिया उजाड़ो तुम बहारें हम वहाँ भर दें  
 जहाँ दीपक बुझाओ तुम वहाँ सूरज उगाएँ हम  
 धँसेरे से उजास की सगन धय तक न हारी है।  
 तुम्हें तसवार प्यारी है हमें झंकार प्यारी है।



## शांति-दूत

रणमेरी बन्द करो अब मेरी धरती पर,  
 संहारों के ये गीत न गाए जाएँगे।  
 तनघारे अब सोहू से नहीं नहाएँगी  
 बेमीसम नन्हे फूस नहीं मुरझाएँगे।

छाया विनाश का यह जो बना सँघेरा है  
 रवि के अगारों में इसको जसना होगा।  
 जीवन की सत्ता फूटी फूटी लहराएगी  
 पतझड़ के पौरो को पीछे हटना होगा।

आओ विनाश ! अपनी ताकत अबमा देखो  
 सोनेवामों पर बार किया क्या बार किया ?  
 इतना आमाग मानते हैं हम भी तेरा  
 तेरी जोड़ों में बहुत बड़ा उपकार किया।

हम एक-दो नहीं आज एशिया का जवान  
 दुनिया भर का बिप पी जाने को मजबूत हैं।  
 सिर बफ्त बांधकर, धीप हथेली पर लेकर,  
 अपना पावन परचम सहारने निकल हैं।

घा बैठ ठंडी साँसों में सतप्त पवन  
मयनां म बधव उठी पीरुप की ज्वाला है।  
सोए भग्मानां न आकाश छू लिया है  
बाणी म पाँचजन्य का घोष निरासा है।

अगारा पर घर चरण नले हूँ दोबाने  
हूँ बौन एशिया का जो दीप झुकाएगा ?  
कारवाँ घाति के दूनों का निबला घर से  
मजिन से पहले कदम नहीं सीन्पाएगा।

घरती बरबट बदलती डोला आममान  
मैमलो सैमनो भूगोल बदलनेवाला है।  
तीमन लगा है हिन्दमहामागर का जय  
मयन से बार्द रत्न निकलनेवाला है।

गंगा की लहरा म यह कैसी हलचल है  
गिरिराज हिमामय न क्यों भीप उठाया है ?  
इतिहास गुल गए हैं किसकी अगबानी में ?  
कारवाँ घाति के दूनों का बन्ध आया है।

घने बजते हैं सामनाष' के मंदिर के  
एनोर अजना की प्रतिमाएँ बाजी हैं।  
कारवाँ घाति व दूनों का बन्ध आया है  
आपाआं ने गुल अपनी गाँठें खोली हैं।

कारवाँ घाति व दूनों का यह नया नहीं  
हमने दुनिया को सना राह दिगसार्द है  
जीवन की जय के गीत मदा हमने गाए,  
पीढ़ियाँ जिम सब तर सुहरती आई हैं।

यह सत्य-कर्म की महिमा गीता का मारा  
 वसुधा कूटुम्ब है हर मनुष्य से प्यार करो ।  
 धरती के नसबो ! धँधियारे पर टूटा  
 मिट आओ पर मानवता का सत्कार करो ।

अभियान 'बुद्ध' का शांति-अहिंसा का नारा  
 एशिया न केवल विश्व मुक्त जिसके आग ।  
 'गांधी' जिसकी बाणी की सुलना नहीं मिले  
 क्या कहूँ काल का दर्प क्या जिसके आगे ।

'मेहरू' के फौलादी हाथों की यह मशाल  
 रोशनी दे रही है जग के धँधियारे को ।  
 हिंसा के मण्डो ! सीम नहीं पाओगे सुम  
 जगमगा रहे मानव के नाम्य सितारे को ।

यह कोटि-कोटि बलिदानी धीरों का प्रयाण  
 इतिहासों की कालिदास धो देने आया है ।  
 एशिया शांति का वृक्ष एशिया ध्वंस नहीं  
 बूढ़े युग का अगार, जबानी लाया है ।

कैसा विरोध ? कैसी विपदाएँ ? कैसा गम ?  
 यह गीत शांति का जग भर को गाना होगा ।  
 सी बबल बेधकर भी बिनाश के आग हम  
 असका को धरती पर उतार साना होगा ।





## पसीना

पसीना हूँ पसीना हूँ

धरा के भाग पर जगमग जड़ा जो बह मगीना हूँ ।

पसीना हूँ पसीना हूँ ।

मगीना हूँ कि जिनकी ज्योति न मूरज सजाता है

धौधेरे का न कोई दाँव जिसको जीत पाता है ।

फन के पाँव जिसके द्वार की दहरी न छूते हैं

जि जिसके होमने अब तक पराजय से भ्रष्ट होते हैं ।

जगत के घादि मे अब तक यवन मुक्त तक नहीं भाई

कभी यवन को निराशा की भरन मुक्त तक नहीं भाई ।

हजारों बार भाग्य मे असाने की मुझे ठानी

यहुत समझा चुका था मैं जरा मेरी नहीं मानी ।

सदा संघर्ष का घादी किसी से मे नहीं हारा

मिटाने का मुझे भाई मगर गुद मिट गई धारा ।

गई-गुजरी हुई है बात पर, जिसकुल गई-मी है,

कभी भाई बनी थी रात पर, जिसकुल गई-मी है ।

प्रणय मे राग भर मगी मगीर्षा रौंद लामी थी

कि उसकी विजयिणी रंगी मयानक नौचवासी थी ।

मुनीजन की पगधो का अग्रय ही दोरदोरा था

विनागी उन हवाओं का अजब ही दोरदोरा था ।

मिटाना चाहती वह नाम तब मेरी कहानी का  
 मगर जानी न थी वह मांल इस अनमास पाना का ।  
 समझती थी कि मैंने ज़िन्गी को भ्रम मिटा डाला  
 मगर यह आदमी की क्षति से उसका पड़ा पासा ।

प्रलय के बाद विमकुल ही अकेला रह गया था मैं  
 समय के हाथ उमड़ा एक मेला रह गया था मैं ।  
 तभी मेरी ज़बानी का अमर अभिमान जागा था  
 अरे ! टकरा गया किससे मरण सचमुच अभागा था ।  
 प्रलय के बाद जितने थे सभी को भेस धाया मैं  
 भवर के आँधियों के साथ जी भर खेल धाया मैं ।  
 हसाहस पी गया इतना धमरता धन गई मेरी  
 स्वयं बंधन बंधे पर, बंध नहीं पाई प्रगति मेरी ।  
 मरण के क्षीप पर धर पाँव बसता आ रहा हूँ मैं  
 मुझे रोको मुझे रोको चुनौती गा रहा हूँ मैं ।

नही तकदीर कोई भीर, मैं तकदीर दुनिया की  
 पलक झपके नहीं मैं तोड़ दूँ जंजीर दुनिया की ।  
 समय का अन्न आहूँ मैं उसी रफ्तार से घूमे  
 नयन खोलूँ कि हर बाधा झुके आकर बरण घूमे ।  
 कहाँ भयभीत दौड़े जा रहे हो ? तुम इधर आओ  
 विजय के द्वार छोड़े जा रहे हो तुम इधर आओ ।  
 पसीना हूँ मुझे से सो नदी न पार उतरो तुम  
 न हो भयभीत कूदन की तरह सरसाव निम्नरो तुम ।

सुख की पुस्तिका के पृष्ठ बिखरे, जोड़ साया हूँ  
 मनुष्यता की वही विपरीत धारा मोड़ साया हूँ ।  
 भरा युग-युग चढ़ा जो पाप का मैं फोड़ धाया हूँ  
 हमेंगा के लिए मैं हाथ यम के तोड़ धाया हूँ ।

पसीना हूँ मुझे मद मे मया मधुवन गिमाना है  
 मगीरख हूँ मुझे भू पर मई गया बुसाना है ।  
 पहाड़ा जो कन्धे समसम कि सागर छान डालूँ मैं  
 मनुजता की धँधेरी राह मे मयवीप बामूँ में ।  
 नही अपमान मेहनत का अधिक धब सह सकूँगा मैं  
 म बन्दी स्वर्ण-जारा में अधिक धब रह सकूँगा मैं ।  
 नही सोता रूँगा धब मुझे दुनिया बदलना है,  
 विपमता के गढ़े से धब मुझे बाहर निकलना है ।  
 मुझे जग के कण अन्याय की होगी जलाना है,  
 जमान मुन मुझे धब द्वार पर मंजिम बुसाना है ।

हँसेंगे खेत हरिबासी नही इनम रामाएगी  
 परा नख रिया सजी दुसहन बनेगी मुस्कुराएगी ।  
 जगत के भाग्य के तारे घटाओं मे न डूबेंगे  
 \* किसी के पाँव पथ के बंष्टकों से धब न उठेंगे ।  
 मरते हो नही क्या रास्ता तुमको मिला धब तक ?  
 पहुँचना चाहते हो स्वर्ग ? बस मैं एक जीना हूँ ।  
 धरा के भास पर जगमग जड़ा जो बह मगीता हूँ ।  
 पसीना हूँ पसीना हूँ ।



## दीपावली एक प्रतिक्रिया

रोशनी की क्या कमी ! दीपक हज़ारों जल रहे हैं  
रात है पर, ज्योति के निर्झर झंझितल गल रहे हैं ।

पर्व दीपों का मनाई जा रही दीपावली है  
ये कतार लोचनों को सग रही नितनी मनी है ।

हर डगर, हर द्वार, दहरे मोद न बुझी हुई है  
चेतना मेरी न जान क्यों मगर, ऊनी हुई है ।

है बहुत बाहर उजासा पर, सपन मन का झंझर  
सिल न पाता बातियों के साथ दागी प्राण मेरा ।

एक बारण स्वप्न मन की छाँस में धगार जमा  
जल रहा निर्धूम ज़िमके जोड़ में समार जैसा ।

झिन्नमिभाठी ये बिभा की रदिमयी चिमगारियाँ हैं  
देनता हैं जल रही इममें धधक झुमवारियाँ हैं ।

क्या करे ! तुम-सी भ्रमिल धालें नही मुझको मिसी हैं  
सपिणी भीचे न बरूँ देख मूँ कसियाँ गिमी हैं ।

पय दीपां का जहाँ दगो दिवाली के दिये हैं  
पर, मुझे लगता कि इनक कठ बिप जैसा पिय है।

मैं घटाएँ देलकर पहचान सेता हूँ प्रमंजम  
फूल की से घोट मुझको वष्य देते हैं निमंजण।

हर हँसी के पास दखो धौमुघा की वह झड़ी है  
दिल जसा बोई मुझे लगता कहो तुम फुलझड़ी है।

यह भनक जैसे कि बुझने के लिए तैयार है हम  
से धौमेरे से कि तेरी भूय का अधिकार है हम।

एक अन्तिम साँस कहती है कि घड़कन बम रही है  
हर शिरा मेरी यही धबसाव सूकर बम रही है।

इस पराजय को विजय का गीत कैसे मान लूँ मैं ?  
इस भुनावे को हृदय-संगीत कैसे मान लूँ मैं ?

तुम मनाते हो दिवाली धीर मरी धौय छलकी  
इस प्रभा के पार मुझको दित रही तसबीर कस की।

यह बड़क कसी ? कहाँ की गर्जना ? विस्फोट कैसा ?  
स्वप्न है तावद मगर है सत्य का सबत जसा।

यह घटा कैसी जमाने को घुएँ न भर दिया है  
हर बसो को एब जहरीली सहुर न छू लिया है।

धुप धौपियारा धुझी धौयें न कोर राह भूमे,  
पर पड़े ज्यानामुगी सब बीन निमकी बाग भूमे ?

बीख हाहाकार, जीवन स मरण खुस खेलता है  
कोन यह इन्सानियत क पाँव पीछे ठमता है ?

हाय यह ता आदमी मुझ-सा हृदय-मस्तिष्क-बासा  
साधना जिसकी रखी देती जमाने को उबासा ।

सजना के दूत ! तेरी चेतना को हो गया क्या ?  
आत्मा का बह दिया सचमुच सहमकर सा गया क्या ?

तू कि जिसने भूधरों को इगितों पर धा मचाया  
तू कि जिसन दर्पशासी दीप अम्बर का झुकाया ।

तू कि जिसन पञ्चतत्त्वों को सहज बन्दा बनाया  
तू कि जो आकाशबासा स्वर्ग भू पर खींच लाया ।

कौन-सी यह मूल ? अपनी सजना को खा गया है  
पागलिकता के चरम उत्कर्ष तक तू आ गया है ।

यह घबकती झील घोसों-सी कि 'अणु-उद्भवन' करों में  
ध्वंस की विकराल बीणा आग बस जिसके स्वरों में ।

आदमी ! पत्थर ! जरा इस ओर करुणा मे निहारा  
एक पल को झलक यह दम का परदा उतारो ।

वह कि जो मल की उमगों में पगी जाती जमाती  
सिर्फ मुसकी स कि जा हर दीप में कमियाँ लिखाती ।

दूध-नी निमस हथेली पर कहीं छोमे भरोग ?  
पोंछकर मिन्दूर हमकी माँग में काजस भरोग ?

और यह मानुष का जो भाग लेकर बस रही है,  
एक सपनों की नई दुनिया कि जिसमें बस रही है।

क्रोध में ही तुम कुषलना चाहत ससार इसका  
हाम इतना तो नहीं सस्ता सनातन प्यार इसका।

यह बगीची यह छटा यह रूप जमाने को नहीं है  
क्यारियाँ जो धुन से सीधी उबड़ने को नहीं है।

यह बहन-बटी टि ये माँ-भाप ये भाई हमारे  
और ये ठेँची नजरवाले कि हमराही हमारे।

पैर धपने बाटकर तुम्हो न जाने क्या मिलेगा ?  
सोच ले जो भी जमगा घर कि वह तरा जमेगा।

और अब भी तू नहीं बदला अगर अभिमानवाले  
ठा उठा ले और ऊपर हाथ धम्बों क उठा ले।

मुन जमानी मोन की लसकार से बरती नहीं है  
जानगी है बेह मदर आत्मा मरती नहीं है।

मुन कि मैं इम्मान हूँ तुम्हो चुनौती दे रहा हूँ  
आज दुनिया की तपन का योद्धा सिर पर ले रहा हूँ।

प्रादमी जिसको प्रलय तक भी न ऐसे भीम पाई  
व्यर्थ तूने धूमि धपु ना' इन गुमाया पर उड़ाई।

है क्या जीवन अभी रचना अभी जारी नहीं है  
फूट क दिन है अभी घणार की बारी नहीं है।

दखता है वह कि जो चट्टान पर अकुर उगा है  
यह मजदूत से हिमा है यह न भाँधी से जिगा है ।

आदमी की आह से मृत खेल रे ! जलना पड़ेगा  
कस तुझे अगारवाला पथ बवल बलना पड़ेगा ।

रोशनी की क्या कमी दीपक हजारो जल रहे हैं  
रात है पर, ज्योति के निर्भर अचिंतित गल रहे हैं ।

पर्व दीपों का मलाई जा रही दीपावली है,  
ये कतारें सोचनों को सग रही सचमुच मसी है ।





## विप्लव

जवामाझों की गसल भरन साधा की भुवासों का कंपन  
 बरसाटा की झन्ने बेग सरिता वा मैं सागर का मयन ।  
 दीर्घ कड़क हू मैं विजसों की सुनकर फट जाएगी छाती  
 जहाँ गिरी मिट गए पुराने नये-नये धबधब सरसानी ।  
 बाह्या मे मजली कराहू म तिमसी मस्त जवानी मेरी  
 भाँसू मे हँसती दाहों मे अनस उगसती वाणी मेरी ।  
 बापा की बट्टान फोड़कर बहना सीसा मैं वह करना  
 मुझे लगा सो गमे नैन-मा कठिन सिंधु के पार उतरना ।  
 कूल-नगारो म बँपकर बहनेवाली मेरी म पार है,  
 हर भाँपी के लिए जीर्ण नुटिया वा मेरा खुला द्वार है ।  
 मैं घाटा हूँ युग की पुंघली सड़ी-ममी तसबीर बदलन  
 फूला की माता मैं जगह पाँवों की खंजीर बदलने ।  
 मैं घाटा हूँ धने जमाने की फूली तसबीर बदलने  
 जोकि घम पर बस पाप की घाटा हूँ तसबीर बदलने ।  
 घपनी पर धा जाऊँ जो मैं यह जर्जर व्यापार बदल दूँ  
 गीत बदल दूँ राग बदल दूँ बीज बरस दूँ तार बदल दूँ ।  
 नोयम की भादव बाणी म जग का हाहानार बदल दूँ  
 एन घाम क्या ? एक मगर क्या ? मैं मारा ससार बरस दूँ ।  
 गाँवों की बराह से उटनी दर्द मरी घावाज बदल दूँ  
 गाड़ बरस दूँ गाड़ बदल दूँ सग्न बरस दूँ ताज बरस दूँ ।

स्वर्ग बनाऊँ दीप धास का भरती की धारती उतारूँ  
 कोटि-कोटि तारे पिघसाऊँ, मैं माटी के चरण पसारूँ ।  
 देवों के नन्दन की मुपमा बमुखा के मरुपस पर वारूँ  
 एक गगन के पास धरा पर सौ-सौ सूरज चाँद सँभारूँ ।  
 ज्वाला-मुलियों के बिस्फोटक अट्टहास-सा मेरा गर्जन  
 सुद्र पाप के घट कब तक कर पाओगे अपना संरक्षण ?  
 युग की तरुण बेसमा अपना रख-गान कर जिस जलाती  
 सावधान मनबली माँधियो ! बुझा सकोगी मेरी बाती ?  
 कूटियों में से जम महल की मीनारों के दर्प हिसाऊँ,  
 प्राण प्राण को स्वाभिमान पर मर मिटने का मंत्र सिखाऊँ ।  
 मेरी मूख विचित्र मूख पाता हूँ और प्यास पीता हूँ  
 पीड़ा दण्य गरीबी आँसू घाप-ताप लेकर जीता हूँ ।  
 तृप्त न तब तक जब तक जग में धन्यार्थों का शेष लेप है  
 गगन उदासी में डूबा है यह धरती सह रही कैसे है ।  
 सावधान धो बेवस हाहाकारों पर इतरानेवालो !  
 धरती को निर्दोष रक्त की धारा में नहलानेवालो !  
 इतिहासों के पृष्ठ स्वार्थ की स्पाही से रँग जानेवालो !  
 बंकासों पर सोने-चाँदी के मीनार सजानेवालो !  
 इंगित एक बदल जाएगा दुनिया का पल-भर में लाला  
 तनी रहेगी सदा-सदा नभ छूती मेरी न्याय-मताका ।  
 हम जीवित साया में कबल रज देता हूँ मैं चिनगारी  
 ये जगती हैं इधर गुफाएँ उधर तोजतीं प्रलय विचारी ।  
 कैसा मम्त जुनून हाथ से देती दीप उतार जवानी  
 कैसा मस्त जुनून बि पी में अँधरि स सागर का पानी ।  
 जिनकी रोनी छीम रहे हो यही तन्त्र छीम सँ तुम्हारा  
 इनके हाथ उठें लुट पाम मही धाएँ बहु कौन किन्तारा ?  
 इतिहासों के पृष्ठ पृष्ठ से पूछो मेरी रामकहानी  
 मुग करवदें नदसते जब-जब मचमे मेरी कुद जवानी ।

बदना है भूगोल समय ने सी है जी-मरकर घोंगाई,  
 बन्नी घासमान बनती है बनते हैं पहाड़ सपु राई।  
 जर्मर तिनके घटानों की छाती छेद जैसे आते है  
 धरतीवासे कबब गगन का हँसकर बेघ जले आते हैं।  
 बना 'कृष्ण' का रोप कामिया के फल पर मैं सुसकर नाचा  
 बनप पाप के गाम मही सह पाते मेरा एन तमाचा।  
 बना 'राम' के कर का दर-दर फोडी ग्रहवार की छाती  
 ससकारा तो रात कम गई सिंहग मुग्ध गा उठे प्रभाती।  
 समकारा तो घासमान की किरणों ने सोना बरसाया  
 ससकारा तो मधुमासों ने धरती को सलमल पहनाया।  
 'शंकर' का तीसरा नेत्र हूँ युग परिवर्तन की छाँची हूँ  
 सुरा न मेरे पास सबब हमाहस देने का आदी हूँ।  
 दरो नहीं यह कासकूट के पूँट कि हँसकर पीले आगो  
 जहाँ मौत मर जाय वहाँ तुम निर्भय होकर जीव जागो।  
 छाँचें खोलो मूलक समान हुमा करते हैं सोनेवाले  
 समपों के दाग तन्ना के असम-नग में रोनेवाले।  
 धरती नौ छाती पर बोझा हूँ रि मौन भय डोनेवाले  
 रने दीप पर हाथ बिनारे बटे बटे रोनेवाले।  
 भवरो में खेनो जहरो में उठकर अपनी तरी तिरामो  
 छानी पीर जमो पानी की उछली साठों से टकरामो।  
 भाँगू बाँट रह हो जग मे ? सदा मधुर मुमवान सुटाओ  
 उर न पाव गँवारो पीर सहेजी मीठे गान सुटाओ।  
 जियो बन आशमी घोर आशमी बने मर जाना होगा  
 गद माँस भी दोग कि जब तब, बाँटों पर मुसकाना होगा।



## गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस है आज मोद का महापर्व  
जनता के वसिष्ठानों की अमर कहानी है।  
उस पूँजी का सम्मान आज हम करते हैं  
आजादी को बीमल जो पड़ी चुकानी है।

बगों भेदा के कवच भेदकर हम अनेक  
इस ग्नि समता के सूत्र खोजकर लाए थे।  
संघर्षों में झुंके बाधाधा से उसभे,  
लड़ते भिड़ते अपनी मजिस्त तक धाए थे।

मिट्टी गोड़ी थी एक बगोचा सींचा था  
उसमें विकास के कुछ बीजगुए उगवाए थे।  
बलम रापी थी सड़ी डालियाँ छाँटी थीं  
बपों में पहली बार जरा मुसकाए थे।

छूट गया झेंघेरा था पर दूर सवेरा था  
हृषिके प्रभात की जाली अभी खुसानी थी।  
किरणें फूटी पर, दायनम बरम न पाई थी  
मुरली-मुरभाई गगिया अभी गिलानी थी।

आजानी मिस जाना बस मित्र ! नहीं काफी  
उसकी रता का बोझ और भी भारी है ।  
आजादी मिस जाए जसे हम नीब रखें  
यह धागे भवन बनाने की तयारी है ।

आधारधिसा रखकर हम हाथ रोक बैठे  
साथी ! सब मानो हमसे भारी भूस हुई ।  
परिणाम यही होना था फूल बने काँटे,  
सपना की केसर महक न पाई घूल हुई ।

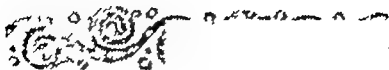
गणतन्त्र दिवस है आज मगर फीका-सा है  
मन की उमंग का रंग नहीं जिस पाया है ।  
अब तक मस्ती पर पड़े भूल के तासे हैं  
अब तक अभाव की जन प्राणा पर छाया है ।

दिन पर दिन और साल पर बीते बने साम  
मूरख का तेजस्वी मुगड़ा न दिखाता है ।  
अब तक माघों का पोत पीर के सागर में  
डगमग डगमग डूबा डूबा उतराता है ।

भंडियाँ आसरें बाजे दीपक मात्ताएँ  
रेगा पीटना मात्र सच्ची अभिव्यक्ति नहीं ।  
तब जब हर पर्व अपूरा है माई ! जब तक—  
जनता व तन मन में आ पाई शक्ति नहीं ।

रयाहार मनाया जाहो तो सबने पहले  
भूगी भंगी इस जनता को गमूढ बरो ।  
भंडियाँ हिमालय समय गैबान के बन्दे  
निधनता और अभावों से तुम युद्ध बरो ।

दो-चार किनारे पर पहुँचे तो क्या पहुँचे  
 पहले पूरा बेंडा का बेंडा पार करो ।  
 तब कहो आज सन्धीस जनवरी आई है  
 कड़ियाँ हिसाघो चाहे जय-जयकार करो ।



## अमर प्रभात

अब मनुजता भी निद्या का धंत खाता जा रहा है पाम  
 चेतना के बाल रवि ने धो दिया नीरव धसित आकाश ।  
 तम भरे जग की धिबिसता में अरुणिमा यह नवीन विकास  
 गेनता है फूम के निष्प्रभ अंधर से अब अनाया हास ।  
 आज महाराजादाओं ने मनुज की  
 पा लिया लोया हुआ आलोक ।  
 फेंक दी है आज युग के बाण जड़ता की वरुण निर्मोक ।  
 इस चुकी बेदों भरी, विद्वेषमय पंक्ति पुरातन रात  
 आज नूतन चेतना नवस्कृति नवनिर्माण पूर्ण प्रभात ।  
 मामिनी का त्याग आश्रम चीरकर भारत पुनर्जित तीर—  
 नवकिरण के  
 छिन्न बग्गे पागबिकता के तले प्राचीर ।  
 उड़ बने गाते हुए नवराग नूतन गान बिहग बिमोर  
 नाप लेने जीर्ण पगों से घरा के और नम के छोर ।  
 तोड़ तम्रा के अपावन पात जम-जम कर्म-जत्र रत  
 कीन रोयेगा ?  
 बढ़ने अब अरण मेरी मनुजता के अग्रनिहत ।  
 मनुज-मनुज गमान है  
 है ध्योम के यदु नगल-नगल समान जल ।  
 निरण में भी निरण में भी भेन ।

कैसा मेद ?

लूँ मैं मान कैसे ?

सब चलेगे आज कभी पर उठा मिलकर बराबर भार

राह के बाँटे भकसा एक छाँटेगा नहीं

सबको सहज स्वीकार ।

पीर की सीमा इकाई के न होगी साथ

यह प्रत्येक लेया बात

आज मेरी जीर्ण सधुता के तरोक सामने

झुकने लगे हैं बात ।

सत्य बिजयी है सदा मे

और जीतगा सदा यह एक नादवत सत्य ।

काँपना है पथ पगों से

आज मेरी जीत पर नगराज है कृतकृत्य ।

आज सबका त्याग यम अक्षुर बनेगा

ऊर्ध्व तस्वर सघन छायादार,

गोद में जिसकी दारण लेगा बका संसार ।

यह मनेगा अब सबेरा ही रहेगा बल चुकी है रात

आज स्वागत है सुम्हारा

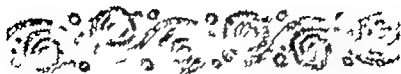
ओ मनुजता के अमर प्रभात !



## तुलसी-रत्ना-वन्दन

मस्ति के निस्पृह दूख मानस का घड़न देनेवासे !  
 स्वीकारो इस दुःख बेचनी का अपूर्ण तुलसा प्रतिवादन ।  
 दबी पिमी जर्जर मानवता के प्रजस प्ररणा प्रयवण ।  
 तुम मुझाग मेरी हिन्दी के चेतनता तुमसे विरचन ।  
 पहनी बार घरा पर गोमी घोंग घोंग जब राम पुकारा  
 निना-निना में गुज गया स्वर 'राम राम जब राम' तुम्हारा ।  
 पल 'नरहरी' स्वामी के गूह भीम माँग दोस दोष-मम  
 और एक निन्धाभाविक मन्त्र आए यौवन घन चंचल ।  
 'रत्ना' मिनी कि जैसे उजड़े मानस को शृंगार मिला गया  
 पुनः मिसी नीलम लहरी से प्रवृत्ति मन-मुमन गिर गया  
 रत्ना की रत्ना अब बेबल रत्नामय तुलसी की रग रग  
 प्यार और ममता की छाया ही तुम्हारी का प्रय भीमित जग ।  
 एन निवम महंगा विरमगिति जा पटुनी जब घपन पीहर  
 यह विषम-मम यादव-जवाग महन गता कोमल मन चंचल ।  
 घनी प्रचेरी नीरव रजनी पड़ी याद गरिमा प्रलयकर  
 विरह-मग्न व्याकुल मन को लगा कल्प बहु एक-एक पल ।  
 वृत्त गा प्राणा की बाड़ी लगा बही देही की ममता ?  
 तन स्नेह की धुन महंगा गागर की लकापी ममता ।  
 यौव निपा यदर बाहु म विमयम प्रवाह मुग पिनयन  
 रत्ना स्नेह राम में होना विनिन हम दोनों तर जाते

हाइ-मैन की नदर काया पर यह कमा ममता प्रियतम !  
 तिरस्कार स क्षाम घृणा स दान उठी रत्ना अकुलाउ ।  
 एक तिरस्कृत सधु पत्त केवल बदल गया जीवन की धारा  
 एस अश्रय दीप बन तुम दाम बना जिसका भ्रमियारा ।  
 आज तुम्हारे साथ प्रथम बदन करता हूँ उस नारी का  
 अधकार क धुलें पप की निरघाभासित उजियारी का ।  
 घुम्ती हुई प्रतिभा की बानी अविनदर आलाक बनी तुम  
 क्यों न कहें अभिवादन वासो लौ की पहली चिनगारी का ।  
 तुम न अगर होती कल्याणा ! तुमनी कैसे तुमनी होते ?  
 तुम न प्रभा की धारा बनती कस खिल पाना यह मधुवम ?  
 तुम प्रवाह बनकर आई थी तब खुस पाए थे अन्तर्द्वग  
 मानस का प्रासाद तुम्हारी अमर प्ररणा का पावन धन ।  
 भू-भसका का सामज्य्य प्रथम जीवन-दान-अन्वेपण  
 जन-जन की गूँगी बाणी का सरी कसा बनी अभिरम्यजन ।  
 जीवन का प्रत्येक पक्ष उस अमर ससनी से आलाकित  
 सौरभभीस अमरसिरोमणि ! अब तक है जग-जीवन बिकसित ।  
 बर्बरता को खुनी चुनौती दी तुमने अपनी कविता स  
 मानहीन भरता का तुमने स्वामिमान का मत्र पड़ाया ।  
 सत्य म्याय उत्तम प्यार, समबदन की भाषा सिखसाई,  
 अहकार मिथ्या महानता गिरि पर, सधुता-कृतु चढ़ाया ।  
 दही मिटी किंतु तुमसी के गीत अजर, माधना अमर है  
 अब तक धरा-गगन रवि-शशि हैं मानमजन-जनकाचिरसजस  
 सब तक राबण सोने की लका क साथ जलेगा भू पर,  
 राम बिजयभी घोषित प्रतिपम जीवन का सिंहासन अद्विजल  
 युग-युग तर खण्डित मानवता क विकास क चोटक तुमनी !  
 रयागी तपी मनस्वी महामुक्ति के मुलझे साधक तुमनी !  
 जीवन की बाणी के एक अकम पावन पूरक तुमनी !  
 काम-प्रवृत्तक भरता की धुबि मर्यादा क गायन तुमनी !  
 स्वीकारो हम दुःख सेगनी का अपूण नुतसा अभिवान्न ।



## कोयल से

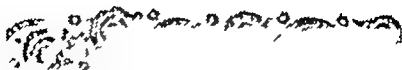
अमृत-मंत्र तेरी बाणी में कोयल ! जी भर बोस  
स्वर की सरस भावुरी से प्राणों में नबरस बोस ।

कितना तपकर पाई होगी ऐसी कसा निरासी  
जिस पर स्योछावर जग-भर का सुर-नोप मतवासी ।  
कैसा सम्मोहन ! प्राणों में सात सिंधु उफनाए  
मस्तित भारोहन सबरोहन पर भूगोल-सगोल ।  
अमृत-मंत्र तेरी बाणी में कोयल ! जी भर बोस ।

तन कासा है मोच रहा हूँ मन किसना मुन्दर है  
जिसके तन्मय बोल बि पिघला पाहन का भी उर है  
कौन बिरह ठप बना मिला जो यह बाणी बरवानी  
भून रहे बत प्रसस स्वरो की महरो का हिन्दोल ।  
अमृत-मंत्र तेरी बाणी में कोयल ! जी भर बोस ।

धुग-धुग बके अयकतू सेकित अविषम गाती जाती  
बैसा निष्ठुर पिया न आया जब से उसे बुसाती  
मैं हूँ एष कि दो पत्र मन को बिरह-भ्रमण के भारी  
तेरे संयम में मैं अपनी रहा बिकसता तोस ।  
अमृत-मंत्र तेरी बाणी में कोयल ! जी भर बोस ।

बरसाती रह इन पीड़ित प्राणों पर मधु की धारा  
 भूला अपनी पोर सखी जो मैंने तुम्हे निहारा  
 मेरे विवश हृदय में फूटे निर्भर विश्वासों के  
 पिमा-पिमा स्वर-मुरा सहेली ! यह पाती अनमोल ।  
 भ्रमृत-मंत्र सेरी वाणी में कोयल ! जी भर धोल ।

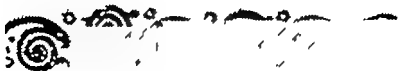


## हरिजन-वाला

भभी सबेरा दूर, संधरा सकिन हारा-हारा  
 गण सिवारे दूब ज्योति का पहसा मिला इशारा ।  
 सारा जग सोया है इसन भभी न हसचल पाई,  
 बही-बही रग भई उठे नीकों से देल सलाई ।  
 सब सोए है दूर कुली में बुझी दीप की जाती  
 एक सहज भोगवाई सती वह जागी मदमाती ।  
 तन्द्रालस भपके-से सावन पलक नधीमे भारी  
 नरम हृषेसी भीड़ उठे है बसने की तयारी ।  
 भुंभरी खुसी लटे माधे पर उसभी-उलभी लेली  
 नई टहनियों-सी उगसी से सुलभ उठे नबसी ।  
 इयाम रंग मेधों के रग-मा मांग लेसली बिजसी  
 इन्द्रधनुष की रेग बाँटती दो भागों म बदसी ।  
 गठे भंग धमक आदी-स मांसल गोरी बाया  
 भभी पूटता धाता मोहन साधन-सा सरसाया ।  
 योवन और रूप का ऐसा सगम अभिषेक न देखा  
 भावर्पण की सोमा सम्मुख मधुराई का लेखा ।  
 पटे वसन धापा तन डाले खुसा हुआ तग भाधा  
 निघनता ने दूर पास ने इसे जम्म स बाँपा ।  
 एक हाथ में टलिया दूजा धामे हुए बुहारी  
 कटि ॥ बस छारसहेंगे का धमकी बसी सपारी ।

घर घर की गंगा बहाता बली गंग का धारा  
 धड़ा स बिभोर हो मैने कितना उसे निहारा ।  
 गली सड़क फुटपाथें आँगन घर घर भड़क बसी है  
 स्वास्थ्य और सुख का घर घर मँडरा गाड़ बसी है ।  
 सेवा इसका धर्म कर्म सेवा सेवा है दधान  
 बचपन स ही तपा कम की आशा मे यह जीवन ।  
 यह सतोपी दो रोटी के टुकड़ों मे मुसकाती  
 घाँट रखी निमलता जग को बदल म क्या पाती ?  
 फटे बसन टूटी-सी कुटिया जीण फूम का छप्पर,  
 घर घर जूठन पर इसके जीवन का क्रम है निभर ।  
 यह उपेक्षिता । फिर भी जीवन घाप नहीं कहती है  
 अच्छा-बुरा मिल जो कुछ भी उसमे लुप्त रहती है ।  
 बड़े सबेरे से ही इसका जीवन क्रम चलता है  
 बड़ी रात तक इसको प्य भर चैन नहीं मिलता है ।  
 सबकी-सी सीसों हैं इसकी इन सबका-सा तन है  
 सबके-स प्रबल हैं सबसे शपादा सुन्दर मन है ।  
 सबकी-सी मद मरी उमंगें युवक-हृदय की चाहें  
 दुल-मुल आशा और निराशा मावक हँसी कराहें ।  
 यह राधा भी अपने बान्हा के प्राणों की प्यारी  
 पलक-पाँवड़े बिछा बेलती पथ यह भी सुकुमारी ।  
 मसी-गली इसका बुढ़ावन कृप्रा-कृप्रा पनघट है  
 सब सरवर तमान-तरवर हैं नास यमुना-तट हैं ।  
 यह समाज की चबल तितली नहीं प्यार की महिमा  
 महो प्रदर्शन नहीं बनावन भूषिमान यह सुयमा ।  
 फूम-फूस पर यह उच्छ्वस फिस फिरी नहीं ससजाती  
 एक फूस स प्यार उसी पर यह सर्वस्व भूटाती ।  
 प्यार सीपना है तो कोई निषनता स सीले  
 प्यार सीपना है तो कोई हम सभुना से मीले ।

सीज और त्योहार सभी कुछ इस सरसा को भाते  
 नाच रहा यह प्राण बि इमक फूले नहीं समाते ।  
 होटी फजरी सरस सावनी यह तमय गाती है  
 ऊल-ऊल गूने पर पर्गे सती मदमाती है ।  
 सुसी हवा में इमने समरसता से जीना सीखा  
 सपनों का गरम सुभा सम इसने पीना सीखा ।  
 यह प्रस्पृश्य उपेक्षित इसको सबकी घृणा मिली है  
 इस देवद्वार लकिन बवि बे मन की किसी पिली है ।  
 बीचड़ में हो पर हीरे की घाब नहीं जाती है  
 मेरी वरुण भावना तेरे सग बही जाती है ।  
 धम स पावन सेवा से महान क्या है जीवन में ?  
 तूने जो कुछ बिया मिलेगा दुनियाको किस धन में ?  
 तेरी पूजा धम की पूजा करता हूँ—अभिनन्दन  
 ओ साकार तपस्या ! तुमने बाँध लिया बवि का मन ।



## गीत

हर मुद्रिक्त आसान हो गई,  
तुमसे जो पहचान हो गई।

बीत गए जैसे सब दुर्दिन  
नये नये सँ लगते पस छिन  
अन्तर की करुणा धारा ही  
प्रीति पगी मुसकान हो गई।  
हर मुद्रिक्त आसान हो गई,  
तुमसे जो पहचान हो गई।

स्रष्टा को सागर का संबल  
कसियों का जीवन है अस्ति दल  
मिसा गगन को जब क्षिति का बल  
सब संसृति गतिमान हो गई।  
हर मुद्रिक्त आसान हो गई,  
तुमसे जो पहचान हो गई।

बिना प्यार तो हृदय अधूरा  
आँख कहाँ राखा बिन पूरा



प्रायः बिना विधवा है काया  
जीवन निशा बिहान हो गई।  
हर मुश्किल आसान हो गई,  
तुमसे जो पहचान हो गई।

ज्योति नयन पग में गति पाई  
साहस में बोधी तरफाई,  
निश्चय का दुकान से परिचय  
प्रीति मुझे बरदान हो गई।  
हर मुश्किल आसान हो गई,  
तुमसे जो पहचान हो गई।

## आज बहुत गाने का मन है


मेघों के घट सिर पर धरकर,  
वह बरसा गूजरिया भाई  
प्रसियों पर बरसा संजीवन  
कसियो पर बरसी तरुणाई  
वेणी खोल केश बिलरारण,  
बिजली की मुखान सँवारे  
तन ही क्या मन भीगा मेरा  
यह कैसी गागर छलकाई ?  
बौराया झम्बर दीवाना  
मतवाला भाँगन भाँगन है।  
आज बहुत गाने का मन है।

छेड़ रही कोयलिया मन की—  
बीणा के सोए तारों को  
'पिया पिया' दे रहा पपीहा  
झोर जवाही झनकारों को  
धूँध धूँध तुण्णा बन बरसी  
बोस उठी गुंगी प्राकृतता  
हवा सपट दे रही बाबली—  
सुधियों ने इन धगरा को

तुमसे दूर न रिमरिम रिमरिम  
तुमसे दूर नहीं सावन है ?  
घाज बहुत गाने का मन है।

दूर दूर तक हरियाली के  
बंजस सागर सहाराते हैं  
वत्सरियाँ ऊपर उठती हैं  
तख्तर नीचे मुक भाते हैं  
मन भर भर भाता है मेरा  
घर नहीं कह पाते जिसको  
मुक्त पवन पर पत सोसकर,  
यही चाह पंछी गाते हैं  
जो उमंग स्रिता की पुन है  
जो उमंग सागर का धन है।  
घाज बहुत गाने का मन है।

घाघो बाँह जुझार सीठें  
घाघो इन भड़िया को छेनें  
घाघो मिसकर पग बड़ाएँ,  
घाघो इन सहरोँ से छेनें  
तुम बेबी बनकर इतराघो  
मैं पी पी की टेर सगाऊँ  
जीवन गाते गाते बीते  
बहु उमंग खरगा से से से  
गाघो तो जीवन जीवन है  
गा न मनो तो यम रागन है।  
घाज बहुत गाने का मन है।



## शरद के चाँद से

ओ शरद के चाँद !

तुम-से रूपवाना चाँद मेरे पास भी है।

एक दिन तकदीर बदसी है तुम्हारी

तुम कसकी निष्कलकी हो सके हो

कौन संचित पुष्प के धल पर न जानें

एक दिन को मह कमप तुम धो सहे हो

और मेरा चाँद ! इसके दिन सूनहले

हर निघा है पूनमी गृंगारवाली

तुम कहाँ इस पर तुलोगे ? विदव भर के—

हप का अपवाद मेरे पास भी है।

ओ शरद के चाँद !

तुम-से रूपवाना चाँद मेरे पास भी है।

तुम किओ अभिमान के आकास पर बठे

घरा के मागरीं को छस रहे हो

भुस मत जाओ उनासे की डगर से

तुम अमावस के नगर को बस रहे हो

और मेरा चाँद ! इसके सोपनों की—

कोर में बन्दी बनी बठी अमावस

क्या कहूँ तुमसे तुम्हारी चाँदनी से  
सौ गुना उम्माद मेरे पास भी है।  
ओ धरदू के चाँद !  
तुम-से रूपवाला चाँद मेरे पास भी है।

तुम कहोगे चाँद मेरा भी कमी तो  
बास के विकराल हाथों से छलेगा !  
धीर तब मेरे लुटे उजड़े हृदय को  
वद हाहाकार तुम जैसा मिलेगा !  
पर सुनो मेरी बत्ता इस चाँदनी को  
रूप यौवन की झमझमा दे चुकी है  
बास के कर, सी न पाएँगे झपर जिससे  
अनखर नाद मेरे पास भी है।  
ओ धरदू के चाँद !  
तुम-से रूपवाला चाँद मेरे पास भी है।



## उपालभ

ऐस गरज रह हो याबल ! जैसे भरे हुए हो  
मुम्मे जात है सिर पर गागर खानी धरे हुए हो ।

पानी हो तुममें तो बरसो ! प्राण जले जाते हैं  
भरे हुए तो नहीं याचना ऐसे ठुकराते हैं  
झीर झगर जलधर भी हो तो यह इतराना कैसा !  
मेरे सागर से चेतनता सेकर हरे हुए हो ।  
ऐसे गरज रहे हो वादल ! जैसे भरे हुए हो  
मुम्मे जात है सिर पर गागर खानी धरे हुए हो ।

या फिर बड़े कृपण हो वारिद ! तुम छोछे हो मन के  
सिंधु सहेजे बठे छीटे दे न रहे जल-जग के ।  
मैं भी देखूं छोटी गागर कितनी भर मकते हो  
देखोगे पतझर के तरु-स तुम भी भरे हुए हो ।  
ऐसे गरज रहे हो बाज्र ! जैसे भरे हुए हो  
मुम्मे जात है सिर पर गागर खानी धरे हुए हो ।

जग की रीति यही है कोई याचना कोई दानी  
तुम बेते हो हम पाते हैं अपनी यही कहानी

भक्त न होता तो पूजा का पत्थर पत्थर होता  
तुम ठारोगे मुझे ? अभी तो मुझमें सरे हुए हो ।  
ऐसे गगन रहे हो यात्रा । जैसे भरे हुए हो,  
मुझे ज्ञात है सिर पर गागर ज़ासी भरे हुए हो ।

## गीत

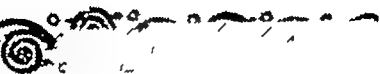
पहले ही पीड़ा क्या कम थी  
जो सुधि की यह पीर दे गए !

बचिठ रहा सदा मैं सुख से  
मेरे प्राण बहुत उम्मन थे  
घाँसू से ज्वाला थी गम था  
दुनिया के सौ मी बधन थे  
मुक्त नहीं था मैं तब भी तो  
एक नई ज़मीर दे गए !  
पहले ही पीड़ा क्या कम थी  
जो सुधि की यह पीर दे गए !

तब दुख में मुसकाता तो था  
वह भी बात नहीं रहने दी  
तब मन ही मन रो सेता था  
वह खरमाग मही रहने दी  
पीर बहुत बमजोर बाँध है  
क्यों तुम इतना नीर दे गए ?  
पहले ही पीड़ा क्या कम थी  
जो यह सुधि की पीर दे गए !



जब कोई अवसर नहीं था  
एक मुझ तुम मिल सहारा  
मिने समझा मेरी निबम तरी—  
पा गई आब बिनारा  
मधुर स्वप्न-से आए, लीटे  
मुझे बिछड़ का पीर दे गए।  
पहले ही पीछा क्या बम थी  
जो यह सुधि की पीर दे गए।



## गीत

तुम बिन मेरे नीरव मन में  
कौन भरेगा कहो उजाला ?

झाँसों में सावन के धन हैं,  
प्राणों में पीड़ा मत्तवासी  
काली मिट्टा रही मेरे घर,  
कभी नहीं आई दीवासी  
एक किरण से तुम घाए थे  
सो भी रुंठे विसृङ्ख गए हो  
अधर छू सके थे बस प्यासा  
तोड़ दिया यह क्या कर बाला ?  
तुम बिन मेरे नीरव मन में  
कौन भरेगा कहो उजाला ?

गोकर तुम्हें कहूँ क्या ? मेरे—  
जीवन में अब शेष रहा क्या ?  
सारे फूस चुन लिए, बोझो  
मधुवन में अब शेष रहा क्या ?  
काँटे बचे सहेजे हैं मैं  
जो तुम दो स्वीकार कल्या ।

तुम न बुझाया तो न बुझाओ  
मेरे विबल हृदय की उवाजा ।  
तुम बिन मेरे नीरव मन में  
बौन भरेगा कहो उजासा ?

मेरे प्यासे प्राण एक बस  
तेरी राह निहारा करते  
सपनों के बीच प्यार के—  
बट की छाँह निहारा करते  
मीलों की सूतिका लिए मन  
तेरे बिज बनाया करता  
लगन पिरोमी रहती निधि दिन  
घोंसू से पूजा की मासा ।  
तुम बिन मेरे नीरव मन में  
बौन भरेगा कहो उजासा ?



## गीत

तुम-सा पारस प्राण परस ले  
यह माटी कचन बन जाए।

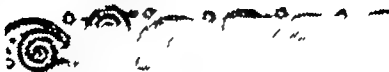
यह बगिया जिसके फूलों ने  
पल भर कभी बहार न देखा  
बानों ने श्रुमार न देखा  
पातों ने जस-भार न देसी  
जिसकी कोयल कूक न पाई,  
मूनी रही सदा भमराई,  
तुम धन घटा ! निमिष-भर बरसो  
यह निर्जन नन्दन बन जाए।

तुम-सा पारस प्राण परस ले  
यह माटी कचन बन जाए।

जग के भाग-पाश में जकड़ी  
धुसी जा रही मेरी काया  
प्राणों पर पीछा का सम है  
कोई सपना निखर न पाया  
ऐसे ही विधवा साधों का—  
जीवन सार हुआ जाना है

ममता की किरणें दे जाओ  
मुझे मुक्ति बंधन बन जाए।  
तुम-सा पारस प्राण परस से  
यह माटी कंचन बन जाए।

कब तक और रहे घुंघुपाती  
स्नेह बिना दीपक की बाती  
तुम प्रबलब कही बन जाते  
यह प्राणी से प्राण मिलाती  
सूनी रात प्रेक्षरा गहरा  
जीवन पर मायस का पहरा  
तुम-सी स्वर्ण-किरण मुसकाए  
यह भजन पदन बन जाए।  
तुम-सा पारस प्राण परस से  
यह माटी कंचन बन जाए।



## गीत

फिर छोड़ो मन की वीणा के—

ये भससाए सार सलोनी !

ये देखो सावन के बादल

वह देखो चपला मतबाली

ये रिमरिम बूँदों की झड़ियाँ

वह कूकी कोयलिया काली

दूर कही 'पी पी' की धुन में

प्राणों का शृंगार उतरता

मेरे ही उर पर पाहन सा

क्यों वह सुबि का भार सलोनी ?

फिर छोड़ो मन की वीणा के—

ये भससाए सार सलोनी !

देख रहा हासों पर भूमे

भूखों में धीबन के भोंके

झाड़ों में पीतों का मेला

रोके कोई इनकी रोके

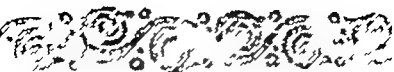
सारा जग हुआ सावन में

ये बिछड़ी पाहों में हुआ

ये घाँसू ये सुधियाँ पीढा  
 बस मेरा ससार सलोनी !  
 फिर छोड़ो मन की बीणा के—  
 ये अससाए तार सलोनी !

यह सावन सावन का मुझ पर  
 असकों की बिसरी घन माला  
 नयनों के प्यासों से छल छल  
 कितनी डली प्रणय की हासा  
 ये भड़ियाँ यह भूला भोके  
 यह मादक मुसकी बिजसी सी  
 ये सूनी सूनी रेंगरियाँ  
 बरिन मेघ मल्हार सलोनी !  
 फिर छोड़ो मन की बीणा के—  
 ये अससाए तार सलोनी !

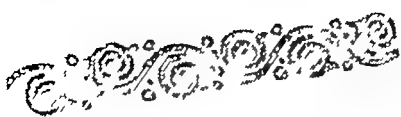
ये क्रोयस के प्रणय संदेशे  
 सुन सुनकर तेरा सकुशाता  
 साज मरी पसलों का झुनना  
 चितवन का बागी हो जाना  
 वह प्यासे मयनों की मासी  
 व उमगी प्राणा की साधें  
 और नहूँ क्या तुमसे ? मुझको  
 मातम यह खोहार सलोनी !  
 फिर छोड़ो मन की बीणा के—  
 ये अससाए तार सलोनी !



## गीत

सिंधु के सौ ज्वार घटर में सगे सेने हिसोरें  
 चाँद छाती से सगाने धाज मेरे प्राण मचसे ।  
 धाज तक निर्जीब थी जो उन सहरियों में जवानी  
 धाज बाँधी बन गई जो घुट रही अब तक कहानी  
 हर सहर में एक जिजसी हर सहर में एक धाँधी  
 नम घरा पर खीच लाने धाज मेरे प्राण मचसे ।  
 सिंधु के सौ ज्वार घटर में सगे सेने हिसोरें,  
 चाँद छाती से सगाने धाज मेरे प्राण मचसे ।  
 यह मैं इतने प्रमदम थे कि जी भर जस न पाया  
 धाँधियों ने दीन बाती को बहुत अब तक सताया  
 इस पराजित बतिका को प्यार का सबस मिला है,  
 मुन कि दीवाली मनाने धाज मेरे प्राण मचसे ।  
 सिंधु के सौ ज्वार घटर में सग सेने हिसोरें  
 चाँद छाती से सगाने धाज मेरे प्राण मचसे ।  
 चाँद ! मेरे सामने तुम धाज साधों की विजय है  
 साधना पूरी हुई, बरवान मिलने का समय है  
 सग रहा है ब्योम की निस्सीमता भर सूँ मुखा में  
 हो गया है क्या न जाने ! धाज मेरे प्राण मचसे ।  
 सिंधु के सौ ज्वार घटर में सग सेने हिसोरें,  
 चाँद छाती से सगाने धाज मेरे प्राण मचसे ।





## एक शरद-निशा

यह शरद की रात भी कितनी सुहानी है !  
 और मेरी छाँव में दो बूँद पानी है ।  
 यह पक्षी ! फिर सोचनों में भीर घाया है !  
 सग रहा जैसे मुझे तुमने बुलाया है ।  
 चाँदनी ऐसी वहाँ भी छा गई होगी  
 और मेरी याद तुमको धा गई होगी ।  
 मैं यहाँ हूँ तुम वहाँ हो दुम मरे होंगे  
 पाव मन के हो गए खपादा हरे होंगे ।  
 प्राण में उमगी अनोखी सुमझुगी होगी  
 तब जबानी बोझ सी तुमको सगी होगी ।  
 बीच चारा और तुमने खूब देखा है,  
 निच गई आकाश पर यह ज्योति रेखा है ।  
 सोचती होगी हमारे बीच दूरी है  
 यह शरद की रात भी कितनी झपूरी है !  
 और तुमको याद वे निन आ गए हाव  
 कोयलें ब ब पपीहे गा गए होंगे ।  
 चाँ- एमा ही मसोनी चाँदनी ऐसी  
 होना से जाती हवा उम्मा-निनी ऐसी ।  
 यामिनी की प्यार या उमा या हम थ  
 गो गए जाने बहाने संसार के गम थे ।

साथ नुबनधन हमारे तोड़ देती थी

और नीरवता उन्हें फिर जोड़ देती थी ।

वह सर्मा वह रग वह रम आज सपना है,

उम्र मर संगी ! हमें ऐसे कसपना है ।

वह निशा अब रह गई केवल कहानी है,

प्यार की संसार ने कीमत न जानी है ।

यह घरद् की रात भी कितनी सुहानी है !

और मेरी छाँव में दो बूँद पानी है ।



## तुम

फनी वो किरण दल कि जैसे गगन की—  
नसों में सगी दीकने रक्त धारा  
सँपरा पुला जागरण की घड़ी है  
नई चेतना में जगत् को संवारा।

उपर व्योम की धात-ऊषा नक्षत्र की—  
सुमन सेज से जागर मुस्कराई।  
इपर यह उपा भयना से रही है  
निगा के उतरते नदों की जम्हाई।

छाये दयाम वृषिण ममूण कनसों को  
विरण उँगलिया से हटाया गया है।  
ति जगे जगत् का गधन तम प्रभा के—  
सुबोमम करों से मिटाया गया है।

मयन दो मुपर प्यासियों में कि जैसे  
गगन का निपाटा गया रंग नीला।  
मयन दो गुरा रूप छम छम छमबते  
पिए जा रहा है हृदय मय कीला।

चपल पुतलियाँ दो कि दो नील नीलम  
 किसी स्वर्ण के आभरण में कसे हैं।  
 चपल पुतलियाँ दो कि दो बाल भौंरे  
 किसी फूल की गोद में आ बसे हैं।

अघर पर हँसी इन्द्रधनुषी विवर से  
 सुधा की बही फूटकर तेज धारा।  
 अघर पर हँसी ज्यों किसी नषकली को  
 किसी मृग का मिला गया हो इशारा।

सगा ज्यों सवेरे सवेरे सलोना  
 किसी रूप सर में कमल खिल गया हो।  
 अमर, मुग्ध मन चम दिया बीड़ चबस  
 बड़ी साध थी आज घन मिला गया हो।

तुम्हें देखकर यों सगा ज्यों युगों की—  
 सिमट एक पल में मधुर साध आई।  
 तुम्हें देखकर यह सगा ज्योंकि सुपमा  
 स्वयं देह धर सामने जयमगाई।

तुम्हें छू लिया तो सगा तेंगलियों ने  
 विकस बिजलियों का बदन छू लिया हो।  
 भके प्राण ने चेतना धौध ली हो  
 धरा के विहग ने गगन छू लिया हो।

कहूँ और क्या ? प्राणघन ! यह मिसन क्षण  
 मुझे जिंदगी की सगन बन गया है।  
 धौधेरी दिशा को किरण बन गया है  
 निशा को सुबह की क्षरण बन गया है।

प्रसन्न हृदय को किसी धारणा है  
कि अब अविगी बेसहारा नहीं है।  
हुम्हें जो न समझू किनारा सहेली !  
जगत में बना ही किनारा नहीं है।



## होली के दिन

होसक पर बठी चाप बंग मे रस के बोल गहे  
अब न रहा चापगा तुमसे मन की बिना कहे ।

बरस बरस की मे वो पड़ियाँ रंगोबाली होसी  
फूलों के छर मारे कोयल की अनभ्याही बोसी ।

दुनिया भर से बाहर निकसी तुम भी बाहर आओ  
झों पर भेसो पिचकारी प्राणों तक रँग जाओ ।

रस में डूबो घाज साज को पलकों में पी लो  
प्यासे अक्षर कमल बन जाएँ, कुछ भी भी लो ।

जर का पीठा घट बुमार के पनघट पर भर लो  
सबकी कही बहुत की कुछ तो मन की भी कर लो ।

फागुन का मौसम बयार से बढ़कर बात करो  
फूलों के रिसते खुमार से बढ़कर बात करो ।

घर में बैठो मत्त गुलाब की महक बुसाती है  
हसके तन से घाज प्यार की सुगन्ध छाती है ।

जुही जमेसी हरसिगार की कसियों को छू सो  
मंजरियां में खीरों पत्तों पर मूमा भूयो ।

वे टमू जो धंगारों की तरह दहकते हैं  
चिनगी चिनगी में उमग के सोते बहते हैं ।

बसो हरे जम्मे से मन की मदिरा से घाएँ,  
सरसों के सागर में जी भर डूबें उतराएँ ।

आज बहुत मन है कि पपीहे की बोली बोलें  
बातों बातों खेल खेल मन के बचन खोलें ।

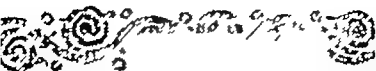
दूर बही वे जो दीवाने फागुन गाते हैं  
रंग गीतों में प्राणा की तपन डुबाते हैं ।

मैं भी इस दुनिया के हाथों बहुत सताया हूँ  
होसी के दिल आज तुम्हारे द्वारे आया हूँ ।

मेन बितने हाथों अब तक देह रेंगाई है  
लेकिन कोई बूंद प्राण तब पहुँच न पाई है ।

दम गुसाम में मेरे मन की गम न मिलती है  
यह रंगीनी परम प्यार का पावर तिलती है ।

दम उमग में प्राणों की साथी घुस जाने दो  
जीवन को दुग सुग की डोड़ी पर तुम जाने दो ।



## गीत

बरसी रिमझिम रस धार प्राण मचसे मचसे  
 जागा है सोया प्यार प्राण मचसे मचसे ।  
 साँसिली घटाधों ने नम का घाँगन धरा  
 रस मरी हुवाधा ने डाला मम में डरा  
 आवाज दे रही है किसको बिजसी रानी ?  
 करके सोसह सिंगार प्राण मचसे मचसे ।  
 बरसी रिमझिम रस धार प्राण मचसे मचसे  
 जागा है सोया प्यार प्राण मचसे मचसे ।  
 मर गए कौन मोती भीमम की प्यासी से !  
 कैसा जादू पट गई धरा हुरियाली से  
 यह इन्द्रधनुष ये मेघ रूप की यह माया  
 सायाँ का यह ससार, प्राण मचसे - मचसे ।  
 बरसी रिमझिम रस धार, प्राण मचसे मचसे  
 जागा है सोया प्यार प्राण मचसे मचसे ।  
 ऐसे में मान किसी का किसी खल नहीं  
 दो दिन की यह बरसात हारकर बले नहीं  
 ये बादल बिजसी झड़ी व्यथ जो तुम न मिते  
 चुन गए हृदय के द्वार प्राण मचसे मचसे ।  
 बरसी रिमझिम रस धार प्राण मचसे मचसे  
 जागा है सोया प्यार प्राण मचसे मचसे ।



## गीत

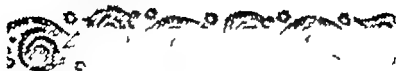
एक आसरा मुझको अपनी आहों का  
और दूसरा तेरी खपक बांहों का।

जब नै इतना दाह दिया बोलस मन को  
मेरी बमजोरी से पहले मिला नहीं  
तब तब मैं आसून धुंध में डूबा था  
जब तब तेरा मुझे सहारा मिला नहीं  
पर, अब तो अपनी पीड़ा से प्यार मुझे  
तेरी करुणा इस पर छाँह किए बैठी  
तूने जो अपने आँखों से सोल लिए,  
कारण है मुझपर उन बदनाम प्रवाहों का।  
एक आसरा मुझको अपनी आहों का  
और दूसरा तेरी खपक बांहों का।

मैंने कभी नहीं चाहा यह जीवन में  
दुनिया में मेरे गीतों की बीमत्त हो  
तुमने अपना लिया दुःखें दाना बाँधी  
मरवा मेरी मम्मी पर कोई मत हो।  
अब तो कुछ तेगा सगता मन को जेम  
मुझे या करना हमारी मजबूरी है

भय भी लगता है कि कभी तुम बिछुड़ गए,  
 क्या होगा इसकी धीवानी बाहों का ?  
 एक आसरा मुझको अपनी आहों का  
 और दूसरा तेरी अपन बांहों का ।

दर्द बाह ने मुझको जीमा सिद्धसाया  
 तुमने सुगम किया है कंटक पथ मेरा  
 दोनों का अहसान बहुत मेरे सिर पर  
 मजिस्त तक पहुँचिगा जीवन रथ मेरा  
 तुमने प्ररित किया मुझे मैं चरूँ जलूँ  
 एकाकी सन्नय या हार गया होता !  
 संपथों में प्यार साथ हो जाए तो  
 पग दो पग होता है योजन राहों का ।  
 एक आसरा मुझको अपनी आहों का  
 और दूसरा तेरी अपन बांहों का ।



## गीत

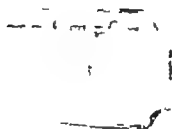
मे प्रतीक्षा ने युगो-से पस नहीं आते मुझे ।

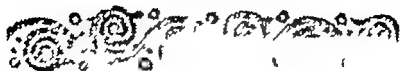
मिस गई है रात की बरदान-सी यह चाँदनी  
 एक मेरा घर उजाले के नयन भूस हुए,  
 एक मेरे प्राण की पूनम अमावस की गई,  
 चाँद के चन्दन चरण मेरा गगन भूसे हुए,  
 उलझ-सी लम्बी निगा गाली दिता बेबैन मत  
 आगरण क स्वप्न निस्तता दाह दे आते मुझे ।  
 ये प्रतीक्षा के युगो-से पस नहीं आते मुझे ।

क्या कहें उमकी क्या तबदीर जिमने छाया हो ?  
 रात बीते पर मनेरे की बिरण भ्रमि नहीं  
 पल्ल-कलिया पर उदामी की घटा छाई रहे  
 भूष दुनिया पर गिसे मेरा वमन भ्रमि नहीं  
 कौन यह दुर्भाग्य पहरा दे रहा मेरी गली म ?  
 कौन ये प्रमिताप ? क्यों दिन रात बमपाते मुझे ?  
 ये प्रतीक्षा ने युगा-ने पस नहीं आते मुझे ।

जानता हूँ मैं कि मरी ही तरह साधारण तुम भी  
 ये प्रतीक्षा के युगा-ने पस तुम्हारे छाया भी हैं

यह धँधेरी रात यह सूनी जगह धुँधली दिशाएँ,  
 यह बसक यह दर्द की हसन्नसुम्हारे साथ भी है,  
 मौन तुम सह सो घटाघों से चुरा सो भाँस जाहे  
 भावसे भावस तुम्हारे द्वार से भाते मुझे ।  
 ये प्रतीक्षा के युगों-से पल नहीं भाते मुझे ।





## गीत

घाज न टोको हाथ न रोको जी भर पी लेने दो साकी ।

जीवन संघर्षों ने मेरा दीवानापन छीन लिया है  
वह भावुक मन छीन लिया है वह मन था धम छीन लिया है  
इन्द्रधनुष के जिन रंगों से मैं जीवन के चित्र बनाता  
वह घर भांगन छीन लिया है रसबाना धन छीन लिया है  
भरा नहीं जो वह क्या छसके ? घट भर भी लेने दो साकी ।  
घाज न टोको हाथ न रोको जी भर पी लेने दो साकी ।

वह मस्ती कैसी मस्ती थी मैं जिसमें डूबा गाथा था  
तुम प्यासा भर भर लाते थे मैं तासी बरखा जाता था  
प्यास नहीं थक पाती मेरी हाथ नहीं रन पाते तेरे,  
हम मद होश बहे जाते थे सुर का सागर सहारा था  
जीने की ता मैं जीता हूँ लेकिन जैसे थापस पायी ।  
घाज न टोको हाथ न रोको जी भर पी लेने दो साकी ।

घाज बहुत दिन बाद तुम्हारे दरवाजे तक आ पाया हूँ  
देगो बिठनी प्यास प्राण के घट में सन्नित कर साया हूँ  
घोर घाज ने बिछुड़े जाने मिस पाएँ, मिम भी मसकें हम ।  
मैं एकदली यह सम्झा पथ पग रगमम हूँ धबराया हूँ  
हो जिनकी चारुनी पिमा दो बूँद नहीं रग लगा बाकी ।  
घाज न टोको हाथ न रोको जी भर पी लेने दो साकी ।

यह मदिरा अनमोल प्यार की पो जिसने यह पार हो गया  
 पो न सका जो कण भी उसको यह जग-जीवन मार हो गया  
 यह मदिरा पीकर कलियों में बे देखो मोरे जीते हैं,  
 मैं जीबित हूँ पर जीवमृत यह मेरा संसार लो गया  
 फिर जी लूँ मैं फिर पी लूँ मैं फिर सब ले जीवन की भ्रंकी ।  
 भ्रान्त न टोको हाथ न रोको जी भर पी सेने दो साकी ।

## गीत

सौरभ के कोप तुम फूल फूल तुम रोना  
गाने साधार हुआ मन पछी घसबेसा  
सौरभ के कोप तुम ।

छाओं के शोक जने सुषिया की भीड़ लगी  
प्राणों का धीर गया  
इन्द्रधनुष पर घरबार पाम सीर नीन डीठ !  
मेरा मन धीर गया  
चंचल चम घसत हुए, री ! बरगा की बेला ।  
गाने साधार हुआ मन पछी घसबेसा ।  
सौरभ के कोप तुम ।

पापनिया बोन रही रग के घट धोल रही  
प्राण धीर ताम रही  
पूरी घमसाई में मेह मरी दीवानी  
जाम डाम नाम रही  
मे ठगम बगार भी उजड़ गया हर मना ।  
गाने साधार हुआ मन पछी घनयमा ।  
सौरभ के कोप तुम ।

मैं उदास क्या गाऊँ ? कोयल के मधुर गीत ?  
 बिजली की केलि कसा ?  
 कल के बँधे फूल ? वृत्त वृत्त याकि मूल ?  
 धार मिली सट न मिसा ।  
 मैं उदास दो क्षण का जीवन का यह रेखा ।  
 गाने साधार हुआ मन पछी धसबेसा ।  
 सीरम के कोष खुले ।



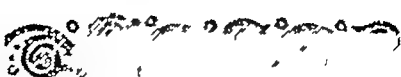
## गीत

भब न भाऊंगा तुम्हारे द्वार, यह अन्तिम वरण है।

भूख धाँपो की हृदय को बेगई थी रात काली  
हाथ री छसना ! प्रभावस को समझ पठे दिवासी  
तुम मरत्यस की घटा छम की कथा भ्रम की कहानी  
सृष्टि तुमसे माँगने चौड़ी नृपा मेरी दिवानी  
सौ भाई हार बारम्बार, यह अन्तिम वरण है।  
भब न भाऊंगा तुम्हारे द्वार, यह अन्तिम वरण है।

क्या कहूँ सत्तार का दस्तूर ही है यह पुख्ता  
भाग देना जानता है, पर, नहीं सीगा बुझना  
निपुणे किता कहा 'रु' का भ्राता ? या सकेमा ?  
पाँच प्यार है, इसे मनुहार ने मिथमा मरेगा ?  
दूटने दे रक्ख है संसार यह अन्तिम वरण है।  
भब न भाऊंगा तुम्हारे द्वार, यह अन्तिम वरण है।

प्रात बुझना नहीं बिमन तुम्ह फिर फिर गुमारा  
या मिया मेरे हृदय ने धौग स भोभम तिनारा  
बार रगना द्वार, थपकी भब महा बेगी गुमार्द  
मानिनी ! अन्तिम बुझे दे दी तुम्ह मरी बघार  
प्रात अन्तिम बार मेरा प्यार यह अन्तिम वरण है।  
भब न भाऊंगा तुम्हारे द्वार यह अन्तिम वरण है।



## नारी

कितने चित्र बने बम बनकर विगड़े होंगे  
 कितनी प्रणिमाओं के रूप सँबारे होंगे  
 बार बार तुमको रत्न की कोमिल होगी  
 जान कर तक राई मौन उतारे होंगे ।

कितनी जिज्ञासा आगा अभिनाया सेहर,  
 युग युग तक साधना कसा को रही तपाती  
 और एक दिन अब तुम पहली बार हँसी थीं  
 फूल गई होगी ब्रह्मा की मुख से छाती ।

फूलों ने तुमसे मुखराना सीखा होगा  
 इयाम घटाओं ने सहरे केनों से धुमड़न  
 तुम आई जैसे मरुभूमि की धू धू जमती  
 धरती पर उठती गंगा की धारा पावन ।

रीक गया मीन्य स्वयं देगा जो तुमको  
 कोमलता ने अरुण अरुण छू लिए महेमी ।  
 हारे ज्ञान क्या ज्ञान बिजान भम तप  
 तुम न मुमक पाइ पर, कसो गूड़ पहेमी ।

मादक हो पूर्णिमा नहीं है इतनी मादक  
छीतस हो सगि ! मोर नहीं है इतनी छीतस  
दाग चाँद में तुम परिपूर्ण रूप ही जैसे  
उपमा कहाँ जिसे बतगा दूँ तुमसे उज्ज्वल ।

नयना दो दो सागर भरे सुरा के मानो  
नीसे गहरे हृदय डूबकर उछर न पाता  
बोझिम पमक पुतलियाँ ढाँके मुँदते गुलते  
जैसे कोई कमल मिहर बाँहें फैलाता ।

केश पादा छहरे सावन के मेघ मसोने  
बनक-कपोल सजाई ऊँचा बिस्मिल अपलक  
हँसी एक पल जमे बीहड़ तममय वन में  
हँसी हजारों एकसाथ बिजलियाँ प्रमानव ।

रजनीगंधा की फूली टहनी सी काया  
- प्रेम प्रगल्भ गंगा की सहरोँ सा बंधस  
छू दो तुम चट्टानों में मिहरन भर घाए,  
जिघरवेग सा गिर जाऊँ दम के दम पाटल ।

भाई लाज साज को देग सजाना तेरा  
स्वर मधुमयता को मानो मापुटी मिस गई,  
निगल बेतुना ही जमे प्रिय । मूँ रूप घट,  
घरनी पर उतरी जड़ता की लीव हिय गई ।

हार रही बप्पना लगनी बीराई नी  
यवे घण्ट बटिअ अभिष्यजन की दामता  
सा मुझाग की साथी छीन मुँह में भी  
इनिहाम न बनमा पागला इसकी गमता ।

साहस नसिक्ता म्वयं अग्नि हो गई राख  
 हिम की धाराएँ सती । तुम्ह न गला पाइ,  
 भड़ गइ जहाँ झुक गई हिमासय की दृढ़ता  
 हँसकर पी गए गरल तुमने ली घँगठार्ई ।

साम्राज्य चरण चूमते मुकुट झुक गए त्रस्त  
 अभिमानी तलवारों का सूख गया पानी  
 चितवन-शर एक पान्थू भीषणतम बर्बरता  
 दाँतों में कुण दाव बज्ज करते अगवान्नी ।

त्याग मोह प्राणों से बढ़कर किम पर होगा ?  
 एक नहीं दो नहीं अपितु सोमह सह्य की  
 महाकास के प्रमथकारी हवनकृण्ड में—  
 गिरनेवाणी सोहू की धारा अजस्र थी ।

रोसी नहीं पोंछने दी तुमने मस्तक से  
 जमा दिया कोमल कलियों-सा मादक यौवन  
 सास सास लपटों के धू धू धनस जाम में  
 हँस हँस कूनी और म धा धधरों पर रोदन ।

माँ हो तुम नतमस्तक हूँ अभीम थड़ा से  
 तुमसे मुझे मिली है जो कण-भर भी ममता  
 अलका का साम्राज्य बिस्व भर का सुख-बैभव  
 नहीं मागता कर पाए इस धन की समता ।

मेरा जीवन निगु तेरी गोदी में मेसा  
 में तेरी भावना रूप घर धाई भरा  
 तेरे सारे स्वप्न बन गए बाया मेरी  
 हृत्प बना बठा छाती में चिन्तन तेरा ।

साधे हुए पीप पर जब तक सराबर कर  
शृंगों से टकरा जाने में मुझे नहीं भय  
जीवन की यह ग्यानि एक पल जस न मनेगी  
जो न मिस तेरे दुमार का पावन प्रथम।

बहना हो यह बार सूत के कण्ठ घागे  
होय घूना घाहम्बर की दुनिया से उमर,  
सारे बग विभेद चूर कर बँध जाते हैं  
पौरुष की प्रेरणा बने मन की गति बदल।

तुम ऐसी साकार प्रकृति भू के ध्यान में  
मुग्ध हुए हम सुन तेरी तुलसादी बोली  
पवन मिथारी बनकर मुरझि माँगने आया  
वीवन मन्त्रि म भीगी बेनी जब प्योसी।

घोर वहाँ तक बने तुम्हारा गौरव बन  
जिसे स्नेह दो तुम बहु तुलसी बन जाता है  
भगारा हो घोर तम्हें धूनर जस जाना  
जाने क्यों इन पायस प्राणों को माता है।

कन्याणी ! मोन्दर्य गर्व बरता है तुम पर  
क्या इतिमता ? रंग अघर यह दुष्ट प्रगाथन !  
स्वाभावित अरुणिमा बपोमा की अघरा की  
शाल अरणमे अथिय विरस आरुणक गोमन।

सीम ल जाए पाणवता मारीत्व तुम्हारा  
गान जाय भगीमत्र धत्र में सीम गरगता  
तपना म गरनो मपना म उबावा उगसा  
धार हा मर देन घूना जीवनमय बटुना।

तुम प्रारब्ध बखस सकती हो मानवता का  
 एक बार जो तलवारो भ्रामी की रानी !  
 क्या नर? पशु? भरकर सकल ममता जो दुगमों  
 देखो तुम जड़ पत्थर तक हो आए पानी ।

युग बीता नवयुग का नूतन अरुण सवेरा  
 भ्रम रहा है नई रक्षियाँ मचल रही हैं  
 बीत गए दिन परबलता के उल्टीड़न के  
 देख रहा हूँ मेरी दुनिया बबल रही है ।

तुम मेरी गति बनो तुम्हारा मैं सुरक्षण  
 तुम मेरी रायिनी थीं मैं बनूँ तुम्हारी  
 गूँज उठे अदृढ प्राण से जीवन सुरगम  
 हम दोनों मिल बन जाएँ जग की उजियारी ।

तुम पर अवलंबित भावी जीवन तरिणी का  
 तुम पतवार पुण्य के कर डीढ़ों पर चसते  
 बह बनता घाटी तुम बनी स्नेह की घाट  
 इसी समन्वय की गरिमा के दीपक जलते ।

जिनका चिरघासोक बिलर जाता भग-जग में  
 छा आया करती दोनों के तप की साली  
 देवि ! तभी पतङ्ग से मुरझाई धरती पर—  
 जिलती है नवभोर सुनहल फूलोंवासी ।

किरण वमीं तुम पुरप हिम-दिला बनकर गसता  
 धरा उधरा बनती इस मिश्र के जल से  
 सावन सी संसृति पट जाती हरियामी से  
 उठ आते ऊपर मोती सागर के तल से ।

जग मा प्रीति प्रबोध दिए जाओ बिगसगिनि !  
 मैं मंगल लेकर जाता हूँ साथ तुम्हारे,  
 मानसता की ज्योति न बुझने पाए पल भर,  
 अट्टहास कर अब न दूट पाएँ छेड़ियारे।

## गीत

सबको हँसी सुहाई मेरी मन की पीर न जाना कोई।

जम ने देखा कवि याता है दुनिया का मन बहसाता है,  
कितनी लुची मिली है इसका यह मुन्न में डूबा जाता है,  
पर, जग को मुसकाने दे जा उसन वस भीसू पाए हैं,  
सोहू को अदयाइ समझा चुमते सीर न जाना कोई।  
सबको हँसी सुहाई मेरी मन की पीर न जाना कोई।

हर हारे मन का सम्बन्ध जो हर मूखे मन का वादस है  
हर झँझियारे भर दीपक जो हर बीराने की हलचल है  
वह कितना सूना सूना है, पल पल दुष्ट सूना सूना है  
जग को मुक्ति दान दे उसके पय लंजीर न जाना कोई।  
सबको हँसी सुहाई मेरी मन की पीर न जाना कोई।

मुसकाया तो निशा डनी है हर मुरझाई कभी खिली है,  
साँस साँस या उठी प्रभाती जड़ता को जेतना मिली है  
पाहन तक में प्राण मरे जा दुनिया की तकदीर जगाए,  
उस कवि से भी सदा रही खूनी तकदीर न जाना कोई।  
सबको हँसी सुहाई मेरी मन की पीर न जाना कोई।



## तानसेन के प्रति

स्वर के राजा ! तुमने बाणी में कैंसी शक्ति जगाई थी  
सुनकर पपीहरे मुटे मुटे कोपल वैठी घरमाई थी ।  
संगीत तुम्हारा जादू था चोरों ने मस्तक मुका लिया  
सारा आलम सुब सुब गुला सारी दुनिया भरमाई थी ।

कहते हैं जब तुम गाते थे बुझते दीपक जल जाते थे  
बेमौसम मेघ बरसते थे पानी की झड़ी लगाते थे ।  
फूलों पर खून झटक आता किसियाँ खबान हो जाती थी  
पम्बर पानी हो जाते थे कहते हैं जब तुम गाते थे ।

है कसा अजब सागर इसमें जो डूब गया बह पार गया  
जो जितनी पीर सहेंज सका बह उठता कब उठार गया ।  
तुमने यह पीर सहेंजी थी तुमने यह पाबक पाया था  
जिसका उबार इस दुनिया को कल्पों के लिए सँभार गया ।

संगीत तुम्हारा दुनिया के बहते पार्श्वों को मरहम था  
जिमका स्वर का बरदान मिला बाणी म रहा कोई गम था ।  
रोनवान मुसबाते थे सोनेबाते पा जाते थे  
संगीत तुम्हारा मुदों को जीवन दे ऐसी सरगम था ।

सामना तुम्हारी सम्राटों का मान झुका जिसके आगे  
 सम्मान झुके जिसके आगे व्यवधान झुका जिसके आगे  
 सामना तुम्हारी जीवन का कुछ ऐसा दर्द लिए जागी  
 क्या बात आदमी की शायद भगवान झुका जिसके आगे ।

अब तक हैं वसे तराने मे इन बहती हुई हवाओं मे  
 अब तक रागिनियाँ घुली हुई असे इन क्षाम घटाओं मे ।  
 अब तक तेरा सगीत गुंजाती है भारत की गली-गली  
 अब तक वह जादू जीवित है रागी ! इन दसो दिशाओं में ।

सग रही घरा की गली-गली है बुन्दावन  
हर युवक कन्हैया हर युवती राधारानी ।  
परिचय परिणय स्थाने मनाने की वेसा  
पी रहे नयन प्यासे दे रहे नयन पानी ।

बरसी है भ्रजब कुमारी नीरव प्रार्थों पर,  
सबके सेंग नाच उठा है मेरा दीड़ित मन ।  
घाँघे टकटकी सगाए, सिपूरी संघ्या  
घोंघियारे की घाँहा में बील रही है तन ।

मैं सोच रहा हूँ कल बरसी बीरानी की  
पतझर या सूखी सूखी यह फूलवारी की ।  
कोमल उदास बेचैन बुलबुला के दिल से  
सामोश पपीहे मौन मधुर किसकाटी की ।

सहमी बुनिया को भाव नया मृंगार मिसा  
कलियाँ चटकी मबहोस जमन सरसाए हैं ।  
फूलों के मजुल प्यासों में भर भर पराग  
बानी बसत में मधु के घूँट पिसाए है ।

मैं सोच रहा हूँ कल फिर उजड़ेगी बहार,  
रेगिस्तानी घाँघियाँ जगत् झुलसाएँगी ।  
धू धू जलने लग जाएगा यह घासमान  
नयनभरा कल फिर उदास हो जाएगी ।

मैं सोच रहा हूँ रे ! ऐसा क्यों होता है  
क्यों भर जाने हर कली लिसाई जाती है ?  
क्यों सावन के घन मधस-मधस फिर घाते हैं  
मंगारा की बरखा बरसाई जाती है ?

वैय रखा नून है जन्म स रखा नया जन्म

दोनों तेजस्वी साय साय हैं जन्म मरण ।

अवसान-उदय दोनों निश्चित गति स नम स

करत हैं सदा स सत्तुति का नियमन ।

परिवर्तन प्रगति सुष्टि का है अविचल विधान

सुख-दुःख यथा प्रपयन् हानि-सान रावन-गायन ।

फिरनी छोटी-सी बात कहानी बुनिया की

परिवर्तन सरिता दुःख-सुख कूस तरी जीवन ।

## ढूँढ और वृक्ष

हरे हरे कोमल पारों के पहले बसल निरासे  
 झूल रहे झूला समीर का कुछ तस्वर मतवाले ।  
 मया मया सावन पाया है नई नई तरुणार्ध,  
 तना गर्व से दीप पास बिजसी जो धभी न धार्ध ।  
 सिपटी तन से युवती वत्सरियों की कोमल बाहें  
 मया मया अनुभव है धब सब पास न धार्ध बाह ।  
 पास बही पर एक ढूँढ है पत्सबहीन दिगंबर,  
 उजड़ा उजड़ा तन है लेकिन निस्पृह मन है उर्बर ।  
 निरासकत निर्बंध प्राण की सवृगति का अभिसापी  
 पूर विभव की तम छाया से तप पूत अभिनापी ।  
 एक रात बोले सब तस्वर, रे कुरूप अपराधुनी  
 देख देख जसता है हमको भोग रहा निज करनी ।  
 पत्सव छिने छिनी तरुणार्ध, रूप गया अभिपापी  
 स्वाभाविक है जसन तुम्हारे अन्तर को जो व्यापी ।  
 ढूँढ हँसा धौलों के धागे नाभी जीवन सुधियाँ  
 (जो धब धार्ध हमसे महँगी नहीं लुटी जो निधियाँ)  
 बोला मैं भी देख चुका हूँ तुम-से दिन मतवाले  
 मैंने भी धावे से मन में दीपक साधोबासे ।  
 मैंने भी मादक मदिरा के रिक्त किए हैं प्यासे  
 मेरे प्राणा से भी फूट बहे सुधियों के छासे ।

सतिकाशों की मृदु बेहियाँ भ्रूमंग अक्षर की हाला  
 साँसों पर साँसों के उमड़ आतप की मधु ज्वाला ।  
 प्राणा से प्राणों के परिणय की मत्तवाली घड़ियाँ  
 जीवन के आगिन में सावन के मेघों की झड़ियाँ ।  
 सोने के जमकीसे बिन रूपे की उजली रातें  
 प्राणों का पाखी करता था आसमान से घातें ।  
 लिप्त किन्तु निलिप्त रहा मैं जल में खिले कमल-सा  
 सब मुझमें मिला गए, सोंप में निर्मल गगाजल-सा ।  
 कितना जसा जसा जीवन का दुःख सत्य पहचाना  
 मिट्टी का तन मिट्टी का मन मिट्टी साना बाना ।  
 दुनिया का जम देखा समझा सदा बसन्त नहीं है  
 कितने पथिक थके पर मिलता पथ का अन्त नहीं है ।  
 कितने फूल अबान यहाँ पर प्रतिदिन भर जाते हैं  
 मरपट कितने जमन सप्त-सिक्ता से भर जाते हैं ।  
 सूरज सा तेजस्वी काल तिमिर से जीत न पाता,  
 जीवन से विघ्नाट मरण का अविमर्श्वर है नाता ।  
 धरा धूप हो गई तुम्हारे पाठ झुलस जाते हैं  
 कड़के बिजनी ठनिक कि सहमे नमन बरस जाते हैं ।  
 मुझे जसा दे किसी धूप में इतनी तपन नहीं है,  
 झुलसे मेरा गाठ किसी रश्मि के भर किरण नहीं है ।  
 मेरी प्रखर साधना साधी ! समझो व्यर्थ नहीं है,  
 भय दे मुझे कि कोई झुझावात समर्थ नहीं है ।  
 मुझे नहीं जोमसा सताओं की बितबन सलजाती  
 सावन के बादल न बुसाते धूप न सज झुलसाती ।  
 तुम कोलाहल के वासी मैं निर्जन का सन्यासी  
 दुःख सुख में जीवन की सम्यक् गति का मैं अभ्यासी ।  
 कासबूट तुम पचा न सक्ते सदा सुरा पर निर्भर,  
 मधु सा सगे हसाहस मैं हूँ नीमकंठ प्रसन्नकर ।



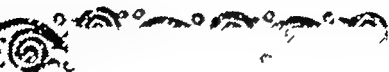
## ढूँठ और वृक्ष

हरे हरे कोमल पत्तों के पहने बसन निरासे  
 झूल रहे झूला समीर का कुछ उदर मतवाले ।  
 नया नया सावन पाया है नई नई तरुणार्ई,  
 तना गर्भ से क्षीप पास बिजसी जो अभी न आई ।  
 लिपटी तम से युवती बल्सरियो की कोमल बाहें,  
 नया नया अनुभव है अब तक पास न आई आई ।  
 पास बही पर एक ढूँठ है पल्लवहीन दिगंबर,  
 उजड़ा उजड़ा तन है लेकिन निस्पृह मन है उबर ।  
 निरासक्त निर्बंध प्राण की सद्गति का अभिनायी  
 दूर विभव की तम छाया से तप पूत अभिनायी ।  
 एक रात बोले सब तस्वर, 'रे कुरूप अपशकुनी  
 देख देख जमता है हमको भोग रहा निज करनी ।  
 पल्लव छिने छिमी तरुणार्ई, रूप गया अभिपायी  
 स्वाभाविक है बसन तुम्हारे अन्तर को जो व्यापी ।'  
 ढूँठ हँसा आँखों के आगे नाभी जीवन सुधियाँ  
 (जो अब पाई इनसे माँगी नहीं लुटीं जो निधियाँ)  
 बोला 'मैं भी देख चुका हूँ तुम-से विम मतवाले  
 मैंने भी बाले थे मन मैं दीपक सार्धोवाले ।  
 मैंने भी भादव मदिरा के रिक्त किए हैं प्याले  
 मेरे प्राणा से भी फूट बहे सुधियों के छाले ।

लतिकाओं की मधु घँहियाँ भ्रूभग अथर की हासा  
 साँसों पर साँसों के उन्मद प्रातप की मधु ग्वासा ।  
 प्राणों से प्राणों के परिणय की मतवाली घड़ियाँ  
 जीवन के भाँगन में सावन के मेथों की भड़ियाँ ।  
 सोने के चमकीले दिन सपे की उजसी रातें  
 प्राणों का पाखी करता था भासमान से बातें ।  
 लिप्ट किन्तु निर्लिप्ट रहामें जस में खिसे कमल-सा  
 सब मुझमें मिल गए, छेप में निर्मल संगानल-सा ।  
 कितना जसा जसा जीवन का दुध्न सत्य पहचाना  
 मिट्टी का तन मिट्टी का मन मिट्टी ताना बाना ।  
 दुनिया का जम देखा समझा सबा बसस्त नहीं है  
 कितने पथिक पथके पर मिलता पथ का अन्त नहीं है ।  
 कितने फूल जवान यहाँ पर प्रतिदिन भर जाते हैं  
 मरघट कितने जमन तप्त-सिक्ता से भर जाते हैं ।  
 सूरज सा तेजस्वी काल तिमिर से जीत न पाता  
 जीवन से बिभ्राट मरण का अविनश्यर है नाता ।  
 जरा धूप हो गई तुम्हारे पात झूलस जाते हैं  
 कड़वे बिजली तनिक कि सहमे नयन बरस जाते हैं ।  
 मुझे जसा दे किसी धूप में इतनी तपन नहीं है  
 झूलसे मेरा गात किमी रब के भर किरण नहीं हैं ।  
 मेरी प्रसर साधना सायी । ममझो व्यथ नहीं है,  
 भय दे मुझे, कि कोई भँझावात समर्थ नहीं है ।  
 मुझे नहीं बौमसा लताओं की चितवन ससचायी  
 सावन के बादल न बुझाते धूप न तन झुससायी ।  
 तुम कोसाहस के वासी मैं निर्जन का संन्यासी  
 दुग मुल में जीवन की सम्यग गति का मैं अन्यासी ।  
 कासफूट सुम पषान सज्जे सगा सुरा पर निभर  
 मधु सा लगे हसाहस मैं हूँ भीसर्जठ प्रसयकर ।



मरकर विजय मृत्यु पर पाऊँ वह जसनेवाला हूँ  
 साक्ष प्रवीण जसाऊँ दुष्कर वह जसनेवाला हूँ ।  
 तन की सुन्दरता पर मेरी नहीं आस्था कण भर,  
 मन की सुन्दरता पर मेरी सब श्रद्धा न्योछावर ।  
 मन कुरूप तो व्यर्थ रूप सम्मोहन की यह माया  
 मन सुन्दर तो क्यों युग-युग का तप सार्थक हो भाया ।  
 किस पर अहंकार ? हरियाभी ! यह पतझर की वासी  
 वत्सरियाँ ? इनके यौवन की पीछे वही उवासी ।  
 सावन बन ! ये घातप की भूमिका बने घाते हैं,  
 इनकी बूँद बूँद के पीछे शोले मुसकाते हैं ।  
 तुम्हें प्यार है तन की मज्जुल हरी हरी छाप्ता से  
 मुझे प्यार है प्राणों में पलती प्रमत्त ज्वाला से ।  
 तुमने जो कुछ मिला सहेजा मैंने सवा सुटाया  
 पल्लव-पल्लव दिया न लेकिन कभी हृदय अकुलाया ।  
 सुख जिसना बाँटो वह निश्चित दुगुना बढ़ जाता है,  
 दाह समेटो जितना सुख के वह समीप आता है ।  
 अक्षर, तख्तर, द्विपद चतुष्पद सब मिटनेवाले हैं,  
 हर उपवन की रूप राशि के पतझर रत्नवाले हैं ।  
 सोचो तो फिर वह क्या है जो बाकी रह जाता है !  
 क्या है वह जो बार मौत का हसकर सह जाता है !  
 जो कुछ दिया सुटाया उतना बाकी रह जाता है  
 जो संग्रह करते हो कास-सरित् में वह जाता है ।  
 क्यों समेटते हो जितना जो भी है उसे सुटाओ  
 बाँटो बाँटो इस मिट्टी का पूरा कर्ज चुकाओ ।  
 कैसा मोह ! सभी बन्दी परिवर्तन की कारा में  
 बहते असौ सभी के बनकर सम्बस भव-धारा में ।



## हारे हुए राही से

कौन हो तुम ? क्यों झुकाए घीप बठे हो ?

कौन बिजली है कि जो मन को जलाती है ?

कौन पीड़ा है नयन जो कर गई गीले ?

क्या हुआ मुसकान अघरों तक न आती है ?

कौन अगारे हृदय में जल रहे ऐसे ?

कौन-सी उलझन कि आगे चस नहीं सकते ?

यह नहीं पहना धौंधेरा है कि जिसके पास—

परचरते हो धक्ककर जल नहीं सकते ।

घोर भी कसी अयानक आँखियाँ आई,

नाच ऐसी तो न लेकिन डगमगाई थी ।

हाथ से चप्पू नहीं छोड़े कभी तुमने

मिट गए, पर मौत से मुँह की न सार्ई थी ।

सिंधु ने टोका पहाड़ों न तुम्हें रोका

तुम सदा संग्राम की जय बोलते आए ।

रात में कितना तुम्हें बाँधा हजारों बार,

रोशनी के द्वार पर तुम खोसते आए ।

आज ही ऐसा हुआ क्या है, कि तुम बेचन

पंथ से हारे हुए भयभीत रोते हो ?

कुछ कहो मैं हर सूर्य सामने तुम्हारी पीर !

कुछ हँसो क्यों आँसुओं से मन भिगोते हो ?'

भावमी हूँ मुझ से हारा हुआ हूँ मैं  
हौसमा दूटा हृदय दूटा हुआ मेरा।  
जिंदगी भर एक घापी ने मुझे मेरा  
क्या कहूँ बस भाग्य ही फूटा हुआ मेरा।

घुप जसती घुप ही मेरी सहेली है  
एक पल भी प्राण तक छाया नहीं आई।  
जिंदगी मेरी मरुस्थल की कहानी है,  
एक नन्ही बूंद साधों को न मिल पाई।

तुम हँसोगे सोचता हूँ दो बची साँसें  
इन बहारा में बरूँ विषाम ही कर नूँ।  
वो बड़ी इन फूल कसियों का सहारा नूँ  
गध से मकरंद से मन की गली भर नूँ।

घीर सोचो भी रहूँ जब तक क्या सहता  
कर्म के तूफान में बहता जसा जाऊँ ?  
वो सुषा के बूँट भावक मिल नहीं पाएँ,  
क्यों जहर की भाग में दहता जसा जाऊँ ?

सब कहूँ इन घावियों से मैं नहीं हारा  
आज अपनी प्यास से हारा हुआ हूँ मैं।  
साससाएँ खींच लाई हैं मुझे पीछे  
मोग की लसवार का मारा हुआ हूँ मैं।'

'भावमी हो अब किनारा चाहते हो तुम !  
सब कहा क्यों जिंदगी भर पीर भेसोगे ?  
बूँट पर आकर मले बूँटो तुम्हें क्या है !  
आज तो तुम तपस्वि से जी सोस सेसोगे !  
हाय इतना तुम न सेफिन जान पाए हो,  
तृप्त होना है पिपासा को बड़ा सेना।

साथ मरकर भी न छोड़गा तुम्हारा जा  
एक ऐसा बोझ ही सिर पर जडा लेना ।

तृप्त होना है अगर तो प्यास को पी लो

दर्द बढ़ने दो यही मुसकान बनता है ।

हर मुसीबत एक दिन सम्मान बनती है

हर थपेड़ा एक दिन बरदान बनता है ।

एक छोटी बात कहना चाहता हूँ मैं

हार के आगे अगर माया मुकाभोगे ।

एक सपना भी मैं पूरा कर सकोगे तुम

और क्या आदर्श जग में छोड़ जाओगे ?

जिंदगी भर विजयियों से जो नहीं सेला

मौत के जिसने नहीं गलवाई डाली है ।

वह जिया बेकार जिसने मुक्त सहराती

आदमीयत की ध्वजा नीचे झुका ली है ।

भावमी हूँ मुख से हारा हुआ हूँ मैं  
हौससा टूटा हृदय टूटा हुआ मेरा।  
जिंदगी भर एक घापी मैं मुझे बेरा  
क्या कहूँ बस भाग्य ही फूटा हुआ मेरा।

धूप जलती धूप ही मेरी सहेली है  
एक पल भी प्राण तक छाया नहीं आई।  
जिंदगी मेरी मरुस्थल की कहानी है  
एक नन्ही बूँद साधों को न मिला पाई।

तुम हंसोगे सोचता हूँ दो बची साँसें  
इन बहारों में बसूँ विधाम ही कर लूँ।  
दो पक्षी इन फूल कलियों का सहारा लूँ  
गंध से मकरंद से मन की गंभीर मर लूँ।

घौर सोचो भी यूँ कब तक क्या सहता  
कर्म के तूफान में बहता बसा जाऊँ ?  
दो सुषा के बूँद मादक मिला नहीं पाएँ,  
क्यों जहर की भाग में बहता बसा जाऊँ ?

सब कहूँ इन घावियों से मैं नहीं हारा  
आज अपनी प्यास से हारा हुआ हूँ मैं।  
नामसाएँ बीच साई हैं मुझे पीछे  
भोग की समवार का माघ हुआ हूँ मैं।

‘भावमी हो अब किनारा चाहते हो तुम !  
सब कहा क्यों जिंदगी भर पीर लेसोगे ?  
कूल पर आकर भले बूँदों तुम्हें क्या है !  
आज तो तुम वृष्टि से भी खोस लेसोगे !  
हाय इतना तुम न सेबिन जान पाए हो  
तृप्त होना है पिपासा को बढ़ा सना।

दाह कितना हो बिससना मैं न लेकिन सीस पाया  
पी गया बिसना मिला विष घीर पीकर मुस्कराया ।

मैं समझता हूँ तुम्हारी पीर, प्राणों की बिकसता  
धुस रहे तुम पर हमारा दाह बहता है पिबसता ।  
घाँस तेरी है मगर रोता दुखी संसार इसमें  
रो रहा है धर्म इसमें रो रहा है प्यार इसमें ।

तुम कि जो इस सृष्टि के सारे चलन देखे हुए हो  
मास-वर्षों का युगों का संचरण देखे हुए हो ।  
वह प्रथम मानव कि जिसने इस धरा पर घाँस लोमी  
भर गया कितनी उम्रगों से हृदय की रिक्त भोमी ।

तुम होंसे इतना कि तुमने यह धरित्री सीस ढासी  
और पतझर ने तुम्हारे सामने धीबा झुका सी ।  
पट गया हरियासियों से शुष्क रेगिस्तान सारा  
बन गए थे तुम नियति के दूत ! जीवन को सहारा ।  
धर्म के तन पर बसन नख-दत प्रस्त्रों का अहेरी  
बोलता फिरता गुंजाता नर विजय की दिव्य मेरी ।

एक दो दस बीस अमर एक मेसा जुड़ गया था  
भावमी का हाथ रचना की डगर पर मुड़ गया था ।  
साधना ऊपर उठी नक्षत्र नभ के तोड़ साईं  
कर्म ने विषवा दिसा के भास पर रोमी रचाई ।

माससाधों ने पवन की बास पर मूसा झुसाया  
भावमी भ्रामे बढ़ा तो सिंधु सार्तों छान धाया ।  
भूख जीवन की रहस्यों के किबारे खोसती थी  
सम्पत्ता अपनी धरा पर मुक्त होकर डोलती थी ।  
और सब से रात दिन ठसते रहे युग कल्प बीते  
सोजता धाया जसा इंसान भीने के मुमीते ।

एक अकूर वा जहाँ भुरमुट गुसावों के लड़े हैं  
सिर झुकाए धूस में रौंदे हुए काटे पड़े हैं ।



## हिमालय के आँसू

दर्द यह कैसा हिमालय ! आज यह कैसा रुदन है ?  
 क्या हुआ जो सिसकियों के भार से बोझिल पवन है ?  
 गस रहा चट्टान का तन आज क्यों बनकर हिमानी ?  
 क्या से मन में जगी कोई दबी पीड़ा पुरानी ?  
 चोट गहरी है, इसे मेरा हृदय पहचानता है,  
 क्योंकि दुनिया की व्याथा में मुक्ति अपनी मानता है।  
 आज से छन्नका हिमालय ! अंधु जो पहसा तुम्हारा  
 दे गया सहसा किसी भूचाल का मुझको हथारा।  
 वह जगी नदियाँ उछल उछल बिसर निर्भर बसे हैं  
 अंधु जल है, पर, मुझ पर बूँद में जोमे मिस है।  
 प्राण की ज्वाला पिघलकर आँसुओं में डल रही है,  
 आदमी के दर्द की कोई कहानी बस रही है।  
 मैं न सुन पाता मगर संवेदना सब सुन रही है  
 अंधु कितने गिन रही है, दाह कितना गुन रही है।  
 पड़ रहा हूँ मैं तुम्हारी वेदना की मुझ माया  
 दे गई है आग भरे प्राण को तेरी पिपासा।  
 और तेरे साथ मेरे गान गीमे हो गए हैं,  
 राग भारी हो गए, भरमान गीमे हो गए हैं।  
 हाँ मगर मैं स्वाभिमानी घुम बहा पाता नहीं हूँ  
 मार्ग हूँ रोकर हृदय का दर्द गा पाता नहीं हूँ।

दाह कितना हो विसमना मैं न सेकिन सील पाया  
पी गया जिसना मिला बिष और पीकर मुस्करामा ।

मैं समझता हूँ तुम्हारी पीर, प्राणों की विवशता  
भुस रहे तुम पर हमारा दाह बहता है पिघलता ।  
घाँस तेरी है मगर रोता दुखी संसार इसमें  
रो रहा है धर्म इसमें रो रहा है प्यार इसमें ।

तुम कि जो इस सृष्टि के सारे बसन देखे हुए हो  
भास-बपों का युगों का संचरण देखे हुए हो ।  
वह प्रथम मानव कि जिसने इस धरा पर घाँस खोमी  
भर गया कितनी उमंगों से हृदय की रिक्त ओसी ।

तुम हँसे इतना कि तुमने यह धरित्री सींच डाली  
और पतझर ने तुम्हारे सामने गीबा झुका ली ।  
पट गया हरियालियों से शुष्क रेगिस्तान सारा  
बन गए थे तुम लियति के दूत । जीवन को सहारा ।  
धर्म के तम पर बसन नल-वत धस्नों का अहेरी  
डोलता फिरता गुंजाता नर-बिजय की दिव्य मेरी ।

एक-दो दस-बीस कमज एक मेला जुड़ गया था  
आदमी का हाथ रचना की डगर पर मुड़ गया था ।  
साधना ऊपर उठी नलज नम के तोड़ नाई  
कर्म ने बिधवा दिष्टा के भाल पर रोसी रचाई ।  
भाससाधों ने पवन की डाल पर मूला झुमाया  
आदमी आगे बढ़ा तो सिंधु सारों छान आया ।  
भूत जीवन की रहस्यों के किनारे लोलती थी  
सम्यक्ता अपनी बरा पर मुक्त होकर डोलती थी ।

और तब से रात्र दिन डलते रहे युग कल्प बीते  
खोजता आया जसा ईमान जीने के मुमीते ।  
एक झंझुर था जहाँ मुरमुट गुसाबों के खड़े हैं  
सिर झुकाए धूम में रींदे हुए काँट पड़े हैं ।



घोघियों में दीप जीवन का बसम-सा तिम रहा है,  
स्वर्ग का आसन घरा की गर्जना से हिल रहा है।

किन्तु तब न धाब से कितना बड़ा अन्तर हुआ है  
आदमी भीतर भुना बाहर भले उर्वर हुआ है।

भू-गगन बाँधे उर्वधि बाँधा दिसाएँ बाँध लाया  
एक अपनी ही पिपासा नर न अब तक बाँध पाया।

दो हृदय के बीच कितना भेद की दीवार आई,  
शक्ति ने अपने लहू को रौंदने में ही बजाई।

धर्म ने बाहा अमित नर का मेंबेरा पथ बदल दे,  
कर्म ने बाहा हृदय की राह के काँटे कुचल दे।

ज्ञान की गंगा बही इसके कमूप पर झूल न पाए,  
अनमनी कर बड़ गया वह दम की धीमा उठाए।

राम का पौख्य गया धनस्याम की गीता जगी थी  
स्नेह का बरदान से राधा जगी सीता जगी थी।

बुद्ध-नाथी की उपस्था सूर-तुलसी का तराना,  
लाम लिबबा थी इसे 'तबरेब' ने बाहा अगलाना।

बुद्ध हिंसा पाशविकता का घूसा का कम न बदला  
अठ गए सूनी सहज ईसा मगर आदम न बदला।

निर्वसन तन पर बसन पर मन अभी तक निर्वसन है  
तन्म प्राणों पर न कोई अभ्यता का आवरण है।

तर्क है थड़ा नहीं विश्वास का संबल नहीं है  
आदमी के पास पावन प्यार का आँखल नहीं है।

रो रहे हो सुम हिमामय ! बाब कुछ क्यादा बरे है,  
सृष्टि के सब पर तुम्हारे अभु घटात-ते भरे हैं।

विजलियों की यह बड़क बाली घटाएँ या गई है,  
बाँद-तारों पर निराना की परत-सी छा गई है।

कुण्डली मारे तिमिर की मणिणी फुलकारती है,  
अध अभावात प्राणों की बुझी सी घांती है।

पर हिमासय ! आ पुरातन विश्व मानव के पुजारी !

व्यर्थ जाएगी नहीं संवेदना निश्छिन्न हमारी ।

आज भी मेरा अटल विश्वास आएगा सवेरा

जगमगाएगा नय आसोक से आकाश तेरा ।





पर हिमासय ! आ पुरातन विद्वत् मानव के पुजारी !

ब्यथ जाएगी नहीं संवेदना निश्छल हमारी ।

आज भी मेरा अटल विश्वास आएगा सवेरा

जयमयाएगा नय आसोक से आकाश तेरा ।

